

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 जयपुर, प्रकाशन - सोमवार, 29 सितम्बर 2025 वर्ष-26 अंक-1 मूल्य-12/- कुल पृष्ठ-12 www.krishakjagat.org पृष्ठ-1

कृषक जगत न्यूज वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें



नवरात्रि एवं दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं



कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों को नवरात्रि एवं दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

- कृषक जगत परिवार

146 अधिसूचित बायोरेटमुलेंट्स की सूची पृष्ठ 11 पर देखें।

कृषि-रसायन क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का आह्वान : श्री गडकरी

CCFI की 62वीं वार्षिक आमसभा में संगठन की मजबूती और उद्योग की वैश्विक स्थिति पर जोर



नई दिल्ली (कृषक जगत)। क्राफ़ केयर फेडरेशन ऑफ इंडिया (CCFI) की 62वीं वार्षिक आमसभा (AGM) नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। इसमें नीति-निर्माताओं, उद्योग नेताओं और किसान संगठनों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा कि कृषि भारत की आत्मनिर्भरता का आधार बनना चाहिए। उन्होंने कृषि का GDP योगदान 18 प्रतिशत से बढ़ाकर 26 प्रतिशत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री गडकरी ने कहा कि भारत का कृषि-रसायन उद्योग 70,000 करोड़ रुपये का है, जिसमें से 51 प्रतिशत निर्यात होता है। यह गर्व की बात है लेकिन कच्चे माल पर निर्भरता घटाना ज़रूरी है। उन्होंने गन्ना व मक्का से बढ़ते एथनॉल उत्पादन और तेलहन अनुसंधान को किसानों की आय बढ़ाने का प्रमुख साधन बताया।

संगठन कार्यकारिणी

सभा में चुनाव भी सम्पन्न हुए। श्री दीपक शाह (SML) को पुनः चेयरमैन चुना गया, जबकि श्री राजेश

अग्रवाल (IIL) और श्री ओमवीर सिंह त्यागी (UPL) उपाध्यक्ष बने। यह पुनर्नियुक्तियाँ संगठन की स्थिरता और मजबूत नेतृत्व का संकेत हैं। श्री शाह चेयरमैन CCFI और एसएमएल लि., ने कहा, 'भारत का कृषि-रसायन उद्योग हर साल 40,000 करोड़ रुपये से अधिक का निर्यात करता है और घरेलू बाज़ार भी उतना ही बढ़ा है। हम 600 अरब डॉलर के खाद्य उत्पादन में योगदान देते हैं। हमारे उत्पाद दुनिया में सर्वोत्तम माने जाते हैं और हमारे सदस्य 'मेक इन

इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' के विज़न को आगे बढ़ा रहे हैं।'

नवाचार और चुनौतियाँ

CCFI के चेयरमैन एमेरिटस श्री आर.डी. श्रॉफ ने कहा कि भारतीय निर्माता दुनिया में सबसे कम लागत पर श्रेष्ठ नवाचार कर रहे हैं और किसानों को सस्ते दाम पर समाधान उपलब्ध करा रहे हैं। श्री राजेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष CCFI और एमडी, इनसेक्टिसाइड्स इंडिया लि., ने भारत को 'अवसरों की भूमि' बताते हुए कहा, '140 करोड़ की आबादी में से 70 करोड़ युवा हैं। भारत की प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। अनुसंधान और विनिर्माण में भारी निवेश ने हमें वैश्विक स्तर पर चैंपियन सेक्टर बना दिया है। जो हम उत्पादन करते हैं, वह न केवल घरेलू ज़रूरतें पूरी करता है बल्कि

निर्यात की भी अपार संभावना है।'

कृषि आयुक्त डॉ. पी.के. सिंह ने 2047 के लिए तैयारी की ज़रूरत बताते हुए फसल विविधीकरण और पोषण सुरक्षा पर जोर दिया। उद्योग की ओर से सुश्री कोमल शाह भुखनवाला ने मिट्टी की सेहत, नाइट्रेंट प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन को सबसे बड़ी चुनौतियाँ बताते हुए कहा कि भविष्य जैविक उत्पादों और हरित रसायनों का है। भारतीय किसान समाज के अध्यक्ष श्री कृष्ण वीर चौधरी ने कहा कि आज भारतीय किसान को किफायती और गुणवत्तापूर्ण कृषि-रसायन उपलब्ध हैं और यही आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव है। इस अवसर पर एमको के चेयरमैन एवं पीएमएफआई के प्रेसीडेंट श्री प्रदीप दवे विशेष रूप से उपस्थित थे।

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमारी सनातन संस्कृति में गौ माता को विशेष महत्व दिया गया है तथा गाय को देवत्व का प्रतीक माना गया है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने गौ संरक्षण और संवर्धन की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाते हुए पंजीकृत गौशाला के लिए मिलने वाले अनुदान को बढ़ाकर 50 रुपये प्रति गाय प्रतिदिन और छोटे बछड़ों के लिए 25 रुपये प्रतिदिन किया है।

श्री शर्मा डीग जिले के गुहाना स्थित श्री जड़खोर गौ-धाम में आयोजित श्री कृष्ण बलराम गौ-आराधन महोत्सव को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने बजट वर्ष 2025-26 में प्रदेश के लघु एवं सीमान्त किसानों को बैलों से खेती करने पर प्रोत्साहन राशि के रूप में 30 हजार रुपये प्रतिवर्ष देने का प्रावधान किया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्प से सनातन संस्कृति का हो रहा उत्थान -

राज्य सरकार ने गौ-संरक्षण एवं संवर्धन के लिए उठाए ठोस कदम

गौशालाओं के लिए बढ़ाया अनुदान : मुख्यमंत्री



मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प से पूरे देश में

सनातन संस्कृति का उत्थान हो रहा है। अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर तथा महाकाल कॉरिडोर का निर्माण हमारी विरासत को मजबूत कर रहे हैं। इसी दिशा में हमारी सरकार ने खाटूश्याम जी मंदिर, पूंछरी का लौठा सहित प्रमुख धार्मिक स्थलों के विकास के लिए बजट में प्रावधान किए हैं। साथ ही हमारी सरकार भगवान श्री कृष्ण के जीवन से जुड़े स्थलों को श्रीकृष्ण गमन पथ के रूप में विकसित कर रही है।

भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात् स्वरूप श्रीमद्भागवत् - श्री शर्मा ने कहा कि हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने में संतों-महंतों का विशेष महत्व है। श्रीमद्भागवत् भगवान श्रीकृष्ण का

साक्षात् स्वरूप है तथा हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शक है। इसके दर्शन मात्र से जीवन में सुख, शांति और संतोष प्राप्त होता है। हमें इन आदर्शों को अपने आचरण में अपनाना चाहिए। उन्होंने आह्वान किया कि सभी संस्कृति के संरक्षण एवं गौ माता की सेवा का संकल्प लें।

राज्य सरकार हमारी समृद्ध सनातन संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए हरसंभव कदम उठाने के लिए तत्पर है। इससे पहले मुख्यमंत्री ने श्री जड़खोर गोष्ठ बिहारी मंदिर में सपत्नीक दर्शन किए और कामधेनु गोशाला में गौ-पूजन कर गाय को गुड़ व हरा चारा खिलाया। साथ ही श्री शर्मा ने परम पूज्य स्वामी श्रीराजेन्द्रदास देवाचार्यजी महाराज के श्रीमुख से भागवत कथा का श्रवण किया। इस अवसर पर गृह राज्य मंत्री श्री जवाहर सिंह बेहम, विधायक नौक्षम चौधरी सहित विभिन्न साधु-संत एवं बड़ी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे।

क्रॉपलाइफ इंडिया ने रखा 1 ट्रिलियन डॉलर कृषि अर्थव्यवस्था का रोडमैप

नेशनल कॉन्फ्रेंस 2025 में सरकार, उद्योग और वैज्ञानिकों ने मिलकर तय की भविष्य की दिशा



नई दिल्ली (कृषक जगत)। श्री शिवराज सिंह चौहान, क्रॉपलाइफ इंडिया ने अपनी नीति-निर्माता और उद्योग जगत 45वीं वार्षिक आम बैठक के प्रतिनिधि शामिल हुए। (AGM) के साथ नेशनल सम्मेलन का उद्देश्य था - कॉन्फ्रेंस 2025 का आयोजन विकसित भारत 2047 के लक्ष्य किया। इसमें केंद्रीय कृषि मंत्री में कृषि और फसल संरक्षण की भूमिका पर चर्चा।

उद्घाटन संबोधन में कृषि मंत्री ने कहा कि किसान देश की आत्मा हैं और उनकी सेवा करना ईश्वर की सेवा है। उन्होंने कहा कि भारत खाद्यान्न की कमी से

निकलकर अब आत्मनिर्भर और निर्यातक बन चुका है।

उन्होंने बताया कि 2050 तक देश की जनसंख्या 170 करोड़ तक पहुँच सकती है, ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सबसे

बड़ी चुनौती होगी।

नवाचार और जिम्मेदारी का संतुलन

डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, अध्यक्ष, पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (PPV&FRA) ने कहा कि हरित क्रांति ने भारत को खाद्य सुरक्षा और आत्मविश्वास दोनों दिए हैं। देश 65 मिलियन टन अनाज उत्पादन से 350 मिलियन टन तक पहुँचा है और बागवानी ने इसे भी पीछे छोड़ दिया है।

2 लाख करोड़ का नुकसान रोकें

क्रॉपलाइफ इंडिया के अध्यक्ष श्री अंकुर अग्रवाल ने कहा कि भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा कृषि उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है, जिसकी वार्षिक निर्यात क्षमता लगभग रु. 40,000 करोड़ है।

उन्होंने बताया कि भारत हर साल कीट और बीमारियों से लगभग रु. 2 लाख करोड़ की फसलें गंवाता है। दिलचस्प तथ्य यह है कि भारतीय किसान

औसतन 400 ग्राम/ हेक्टेयर कीटनाशक इस्तेमाल करते हैं, जबकि वैश्विक औसत 8,000 ग्राम है। यह साबित करता है कि भारतीय किसान दक्ष हैं और अति-उपयोग नहीं करते।

श्री अग्रवाल ने कहा कि क्रॉपलाइफ इंडिया के सदस्य देश के 70 प्रतिशत से अधिक कारोबार का प्रतिनिधित्व करते हैं और वैश्विक फसल संरक्षण के 95 प्रतिशत रसायनों और अणुओं में योगदान करते हैं। उन्होंने वादा किया कि उद्योग जिम्मेदार नवाचार, प्राकृतिक खेती के समर्थन और कीकृत कीट प्रबंधन को आगे बढ़ाएगा।

साझेदारी से बनेगा मजबूत भविष्य

सम्मेलन में समग्र चर्चा हुई कि नियमों और राज्य स्तर पर पालन की जटिलताओं को आसान बनाना जरूरी है। साथ ही, सतत कृषि के लिए कीटनाशकों की भूमिका पर भी विचार किया गया।

बीज उद्योग में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सुधार से सालाना रु. 800 करोड़ की वृद्धि संभव



नई दिल्ली (कृषक जगत)। फेडरेशन ऑफ सीड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (FSII) ने कहा है कि अगर बीज उद्योग में नियम आसान किए जाएं और 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' पर जोर दिया जाए, तो हर साल रु. 800 करोड़ से अधिक का अतिरिक्त आर्थिक मूल्य पैदा किया जा सकता है। इससे किसानों तक बेहतर बीज समय पर पहुंचेंगे और भारत की वैश्विक बीज व्यापार में हिस्सेदारी 1 प्रतिशत से बढ़कर 2035 तक 10 प्रतिशत तक पहुँच सकती है।

यह रिपोर्ट, 'भारतीय बीज उद्योग में व्यापार अजीत के. साहू ने बताया कि सरकार नियमों को करने में आसानी', FSII की 9वीं वार्षिक आम सरल बनाने और अलग-अलग कानूनों को बैठक में जारी की गई। रिपोर्ट के अनुसार, नियमों मिलाकर नया ड्राफ्ट सीड बिल लाने पर काम कर में सुधार से बीज कंपनियां हर साल 3-5 नई रही है।

किस्में बाजार में ला सकती हैं और R&D निवेश बढ़ा सकती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, जटिल नियमों और देरी के कारण बीज उद्योग को हर साल करीब रु. 300 करोड़ का नुकसान होता है। लाइसेंसिंग और रजिस्ट्रेशन की बाधाएं MSMEs को प्रभावित करती हैं।

पीपीवीएफआरए के चेयरपर्सन डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि मजबूत बौद्धिक संपदा (IP) ढांचा और समय पर मंजूरी किसानों तक तकनीक पहुंचाने की कुंजी है। वहीं, कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव (बीज)

रिपोर्ट के खास बिंदु

- सरल नियमों से रु. 800 करोड़ की अतिरिक्त वृद्धि संभव
- वैश्विक बीज व्यापार : 2035 तक 10 रु. हिस्सेदारी का लक्ष्य
- नई किस्में आसानी से बाजार में
- नियमों से हर साल 300 करोड़ का घाटा
- R&D में 15 प्रतिशत तक बढ़ोतरी संभव
- किसानों की मांग - जीएम फसलें

ICAR के सहायक महानिदेशक (बीज) डॉ. डी. के. यादव ने पब्लिक-प्राइवेट सहयोग की अहमियत बताई। FSII अध्यक्ष अजय राणा ने कहा कि नियमों की बाधाओं से बीज कंपनियों को हर साल 800 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। उन्होंने कहा कि 'अगर लाइसेंसिंग को एकीकृत कर दिया जाए और प्रक्रियाएं डिजिटाइज हो, तो उद्योग को रु. 382-708 करोड़ की बचत होगी, R&D में 15 प्रतिशत तक वृद्धि होगी और भारत वैश्विक बीज बाजार में बड़ा हिस्सा हासिल कर सकेगा।'

जैविक उत्पादों को विश्वसनीय बनाने, उद्योग को करना होगा ठोस प्रयास : BASAI 2025

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 'बायोलॉजिकल्स फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर-ए क्लाइमेट रेजिलिएंट अप्रोच' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन BASAI 2025 में नई दिल्ली में कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और उद्योग जगत के प्रतिनिधि एकत्र हुए। सम्मेलन का आयोजन बायोलॉजिकल एग्री सोल्यूशंस एसोसिएशन ऑफ इंडिया (BASAI) ने किया।

सम्मेलन ऐसे समय में हुआ जब कृषि मंत्रालय ने बायोस्टिम्युलेंट्स की गुणवत्ता और नकली

BASAI की अध्यक्ष सुश्री संधीपा कानितकर ने कहा कि जैविक उत्पाद उत्पादकता की खाई को भरने, मिट्टी की सेहत और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। सही नीतिगत समर्थन के साथ भारत बायोस्टिम्युलेंट्स, बायोफर्टिलाइजर्स और बायोपेस्टिसाइड्स में वैश्विक नेतृत्व कर सकता है।

निर्यात मानक और जैविक उत्पाद

डॉ. जे.पी. सिंह, अतिरिक्त पादप संरक्षण



उत्पादों को लेकर चिंता जताई है। वहीं दूसरी ओर, भारत का जैविक उत्पाद क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है। एसोसिएशन के अनुसार, बायोस्टिम्युलेंट्स का बाजार 2022 के 410.78 मिलियन डॉलर से बढ़कर 2032 तक 1,135.96 मिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। बायोफर्टिलाइजर्स का बाजार 2033 तक 399.67 मिलियन डॉलर तक पहुंचने की संभावना है, जबकि बायोपेस्टिसाइड्स में भी लगातार दहाई अंक की वृद्धि दर्ज की है।

नियामक ढांचा और भरोसा

उद्घाटन सत्र में कृषि आयुक्त श्री पी.के. सिंह ने कहा कि भारत ने जैविक उत्पादों के लिए मजबूत नियामक ढांचा तैयार करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने कहा, ये नियम किसानों तक उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद पहुंचाने, उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने और लंबे समय तक भरोसा कायम करने में मदद करेंगे।

सलाहकार ने कहा कि जैविक उत्पादों के उपयोग को निर्यात मानकों से जोड़ना बेहद जरूरी है। उन्होंने APEDA के साथ सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि MRLs के उल्लंघन के कारण होने वाली अस्वीकृतियों को कम किया जा सके। जुजर खोराकीवाला, CMD बायोस्टेट ने कहा कि किसानों के साथ सीधा जुड़ाव ही असली प्रभाव पैदा करता है। उन्होंने कहा, '1988 में हमने सीवीड पर काम शुरू किया, लेकिन असली असर तभी पड़ा जब हम खेतों पर जाकर किसानों से सीधे संवाद करने लगे।

BASAI CEO श्री विपिन सैनी ने भी किसानों से जुड़ाव और पारदर्शिता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, भारत के किसान हमारे खाद्य तंत्र की रीढ़ हैं। BASAI 2025 का मकसद है कि किसानों को व्यावहारिक समाधान मिले और साथ ही किसानों में जैविक उत्पादों को लेकर विश्वास भी बने।

बौद्धिक सम्पदा का संरक्षण, पुरातन भारतीय ज्ञान का समावेश

उदयपुर। माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर में वरिष्ठ अधिकारियों और विभागाध्यक्षों को सम्बोधित किया। माननीय कुलगुरु, एमपीयूएटी डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े का एमपीयूएटी आगमन पर हार्दिक स्वागत किया और विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का उल्लेख किया।

माननीय राज्यपाल ने अपने अभिभाषण में कुलगुरु कर्नाटक के नेतृत्व में एम.पी.यू.एटी. की उल्लेखनीय उपलब्धियों की प्रशंसा की। राजस्थान के राज्यपाल श्री बागड़े ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना चाहिए। एक मजबूत शिक्षा प्रणाली ही एक मजबूत और चरित्रवान राष्ट्र की नींव होती है। राज्यपाल श्री बागड़े ने प्राचीन काल में गुरुकुलों में दी जाने वाली शिक्षा का उदाहरण देते हुए कहा कि भले ही उन गुरुकुलों में इंजीनियरिंग की डिग्री वाले लोग नहीं होते थे, फिर भी वे तकनीकी रूप से इतने उन्नत थे कि मजबूत इमारतें बनाते थे। राज्यपाल ने कहा कि स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा किताबी नहीं, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए ताकि 'व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाया

उच्च गुणवत्ता का शोध व किसानों तक उसका लाभ पहुंचाना ही विश्वविद्यालय का उद्देश्य : श्री बागड़े



जा सके'। उन्होंने बताया कि राइट ब्रदर्स ने जो विमान बनाया था उसके आधार पर उन्हें विमानों का आविष्कारक माना जाने लगा, जबकि इसे सबसे पहले एक भारतीय इंजीनियर ने ऋषि भारद्वाज और उनके ग्रंथ 'यंत्र सर्वस्व' से प्राप्त अनमोल ज्ञान के आधार पर 1895 में डिजाइन कर उसका सार्वजनिक प्रदर्शन भी किया था। लेकिन अंग्रेजों ने उनके इस आविष्कार को धुल धूसरित कर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर्स से उच्च कुशल और नैतिक तकनीकी पेशेवरों को तैयार करने का आह्वान किया। माननीय राज्यपाल ने छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कमजोर वर्गों के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति,

विश्वविद्यालय के मुख्य कॉलेजों और संबद्ध कॉलेजों को NAAC मान्यता की आवश्यकता की बात भी की। विश्वविद्यालय अधिकारियों के साथ मुख्य रूप से कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई जिनमें अकादमिक, NAAC संबंधी, विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति, शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक पद, संरचनात्मक ढाँचा, सूचना एवं प्रौद्योगिकी एवं अन्य गतिविधियों की समीक्षा आदि शामिल हैं।

इस अवसर पर स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय और एल्सवियर द्वारा विश्व के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के 2 वैज्ञानिकों डॉ. एन. एल. पवार और डॉ. विनोद सहारन को राज्यपाल

महोदय ने विशेष रूप से सम्मानित किया।

माननीय कुलगुरु, एमपीयूएटी डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने बताया कि 1999 में स्थापित एमपीयूएटी ने कृषि शिक्षा, अनुसंधान, कौशल विकास और नवाचार में उल्लेखनीय प्रगति की है। विश्वविद्यालय ने अब तक 58 पेटेंट, 81 अंतरराष्ट्रीय एमओयू, मक्का और औषधीय फसलों की उन्नत किस्मों का विकास, 26 अनुसंधान परियोजनाएँ, लाखों किसानों को प्रशिक्षण, मजबूत अनुसंधान सूचकांक: स्कोपस एच-इंडेक्स-83, गूगल एच-इंडेक्स-97 एमपीयूएटी की उपलब्धियाँ हैं। हमने एनईपी-2020 लागू करने और कृत्रिम बुद्धिमत्ता व डेटा साइंस में स्नातक पाठ्यक्रम शुरू करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। हाल ही में राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग (NIRF-2025) में राज्य के वित्त पोषित विश्वविद्यालयों में स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है। एमपीयूएटी कुलगुरु ने आश्चर्य किया कि एमपीयूएटी प्रधानमंत्री के विकसित भारत-2047 विज़न में कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए कृत संकल्पित है।

बैठक में कुलसचिव श्री अशोक कुमार, वित्त नियंत्रक श्रीमती दर्शना गुप्ता, सभी अधिष्ठाता, निदेशक, वरिष्ठ कर्मचारी परिषद के सदस्य, परीक्षा नियंत्रक, विभागाध्यक्ष भी उपस्थित थे।

श्री कुमावत ने ग्रामीण सेवा शिविरों का किया निरीक्षण

मंगला पशु बीमा योजना की पॉलिसी की वितरित



जयपुर। पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के कैबिनेट मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने पाली जिले के सुमेरपुर ब्लॉक की ग्राम पंचायत बाँकली, पाली पंचायत समिति क्षेत्र की ग्राम पंचायत भांगेसर के ग्रामीण सेवा शिविरों का अवलोकन किया।

बाँकली के ग्रामीण सेवा शिविर में मंत्री श्री कुमावत ने अवलोकन कर विभिन्न विभागों के काउंटरों का निरीक्षण किया। श्री कुमावत ने शिविरों में परिवेदनाओं को गंभीरता से सुनकर त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रत्येक योजना का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए संकल्पबद्ध है। उन्होंने ग्रामीणों से इन शिविरों का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

श्री कुमावत ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की मंशा के अनुरूप इन ग्रामीण सेवा शिविरों में आमजन की समस्याओं का शीघ्र निस्तारण कर त्वरित राहत दी जा रही है।

श्री कुमावत ने कहा कि इन सेवा शिविरों में 16 विभागों को शामिल किया गया है, जहां सम्बंधित विभाग के अधिकारी न केवल योजनाओं की जानकारी दे रहे हैं बल्कि आमजन की लंबित समस्याओं का भी त्वरित निस्तारण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक ही मंच पर और एक ही स्थान पर सभी विभाग समन्वय के साथ आमजन

की समस्याओं का त्वरित निस्तारण करें।

उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग से जुड़े काम जैसे नाम शुद्धिकरण, नामांतरण, बंटवारा विवाद आदि काम वर्षों से अटके हुए हैं, जिनका त्वरित निस्तारण इन शिविरों में हो रहा है। इसके साथ ही राज्य सरकार की कई योजनाओं का लाभ भी मौके पर ही प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह क्षेत्र कृषि और पशुपालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां की अधिकांश आबादी कृषि और पशुपालन पर निर्भर है इसलिए उन्होंने इन विभागों की योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने पशुपालकों से मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना का लाभ उठाने के लिए कहा। उन्होंने बताया कि इस वर्ष के लिए 1 अक्टूबर, 2025 से मंगला पशु बीमा योजना का पंजीयन प्रारंभ किया जा रहा है इसलिए अधिक से अधिक लोग इस योजना का लाभ उठाएं। कार्यक्रमों में मंत्री श्री कुमावत ने पशुपालकों को मंगल पशु बीमा योजना की पॉलिसी, आवासीय पट्टों का भी वितरण किया।

पशुपालन सचिव ने राजकीय बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय का किया निरीक्षण

जयपुर। पशुपालन विभाग के शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने बांसवाड़ा में दाहोद रोड स्थित राजकीय बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय का औचक निरीक्षण कर चिकित्सालय सेवाओं एवं कार्यकलापों की जानकारी ली। इस दौरान चिकित्सालय के उपनिदेशक डॉ. शेखर बुट्टे ने एक्स-रे, सोनोग्राफी, श्वान केनल हाऊस रेस्क्यू कक्ष, जिला रोग निदान प्रयोगशाला एवं संयुक्त निदेशक कार्यालय की कार्य व्यवस्था का अवलोकन कराया। शासन सचिव डॉ. शर्मा ने चिकित्सालय के चिकित्सकों व कार्मिकों से विभागीय कार्यों एवं योजनाओं को ईमानदारी से पशुपालकों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने तथा आवंटित लक्ष्यों को समयावधि में पूर्ण करने व प्रत्येक कार्मिक को संस्था में उपस्थित होने सम्बंधी

अटेन्डेंस मैनेजमेंट सिस्टम को अपनाने के निर्देश दिये। उपनिदेशक डॉ. बुट्टे ने बताया कि श्वान जन्म नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत पशुपालन विभाग द्वारा चिकित्सा कार्य एवं नगर श्वानों को नसबंदी हेतु उपलब्ध करवाकर जिस स्थान से श्वान को पकड़ा जाएगा, नसबंदी उपरान्त चिकित्सा परामर्श के बाद वहीं पर छोड़ा जाएगा।

नवनियुक्त कार्मिक अपने दायित्वों को ईमानदारी से करें

राज्य सरकार द्वारा पशु चिकित्सा संस्थाओं को साधन सम्पन्न एवं पर्याप्त तकनीकी स्टाफ उपलब्ध करवाने के लिए जिले की विभिन्न पशु चिकित्सा संस्थाओं में पशु चिकित्सा एवं साफ-सफाई के लिए 156 पशु परिचरों को नियुक्तियां प्रदान करने से पूर्व आवश्यक दिशा-निर्देश

एवं पशु गतिविधियों से पशुपालकों को लाभान्वित करने के लिए एक बैठक बहुउद्देशीय पशु चिकित्सालय परिसर में आयोजित की गई, जिसमें शासन सचिव डॉ. शर्मा ने पशु परिचरों को ईमानदारी एवं समय पर संस्थाओं में अपनी सेवाएं प्रदान कर एक आदर्श पशु परिचर के रूप में पहचान बनाने पर बल दिया। डॉ. शर्मा ने नवनियुक्त पशु परिचरों को शपथ दिलाते हुए उसकी अक्षरशः पालना करने की बात कही। इस दौरान विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. विजय सिंह भाटी, उपनिदेशक डॉ. शेखर बुट्टे, डॉ. रतन कुमार बंसल एवं समस्त विभागीय अधिकारी, कर्मचारी मौजूद थे। विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. विजय सिंह भाटी ने जिले में संचालित संस्थाओं के माध्यम से किये जा रहे पशुपालन विस्तार योजनाओं की जानकारी दी।

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्दिद्या - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराडे

अमृत जगत

जो मनुष्य अपने वचन पर दृढ़ रहता है,

उसके बारे में मुझे कोई संदेह नहीं रहता। - महात्मा गांधी

2 अक्टूबर को नवरात्रि के समापन पर दशहरा का पर्व पूरे देश में श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत अर्थात् बुराई के प्रतीक रावण पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की विजय की स्मृति में मनाया जाता है। दशहरा के बाद बीस दिन बाद भारत सहित विश्व के अनेक देशों में दीपावली का त्यौहार धूमधाम से मनाया जाएगा। पांच दिनों तक चलने वाले पावन पर्व दीपावली के दौरान सबसे ज्यादा मिठाईयों की मांग रहती है। व्यापारी और मिठाई बनाने वाले इस त्यौहार का साल भर प्रतीक्षा करते हैं। दीपावली के दौरान मिठाईयों की अत्यधिक मांग होने का फायदा मिलावटखोर उठाते हैं और बड़ी मात्रा में मिठाई बनाने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले दुग्ध उत्पाद खोवा में मिलावट करने से नहीं चूकते। इन्हीं दिनों बड़ी मात्रा में नकली और मिलावटयुक्त खोवा भी जब्त किया जाता है और यह सिलसिला कई दशकों से बदस्तूर जारी है।

मिलावटखोर नागरिकों के स्वास्थ्य की परवाह किए बिना ही खोवा और अन्य दुग्ध उत्पादों में मिलावट करते हैं। दूध और दुग्ध उत्पादों में मिलावट से उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव तो पड़ता ही है,

आर्थिक रूप से भी हानि होती है। हर साल खाद्य विभाग दीपावली के एक-दो सप्ताह पहले मिलावटखोरों के खिलाफ अभियान चलाती हैं और मिलावट व नकली दुग्ध उत्पादों को जब्त भी करती हैं। हर साल नकली और मिलावट वाला खोवा जब्त किया जाता है, जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाता है और कागजी कार्रवाई कर प्रशासन भी औपचारिकता पूरी कर लेता है। यदि मिलावटखोरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होती तो सम्भवतः मिलावट और नकली खाद्य सामग्री बनाने वाले हतोत्साहित होते।



भारत में खाद्य पदार्थों में मिलावट के खिलाफ मुख्य कानून भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 है, जो मानव उपभोग के लिए सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराने के लिए नियमों का पालन करवाता है। इसके तहत, मिलावट के मामलों में भारतीय दंड संहिता की धारा 272 और 273 भी लागू हो सकती है, जिसमें छह महीने तक की कैद या जुर्माना या दोनों की सजा है, जबकि गंभीर मामलों में, जैसे स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचाना, सजा आजीवन

कारावास तक हो सकती है। मिलावट जैसे संगीन अपराध की रोकथाम केवल कानून से नहीं हो सकती। यदि ये कानून इतने कारगर होते तो भारत में मिलावट पर रोक लग गई होती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और मिलावट में कोई कमी हुई बल्कि इसमें हर साल वृद्धि हो रही है। मिलावट पर पूरी तरह रोक लगाना तो सम्भव नहीं है लेकिन कुछ हद तक सफलता मिल सकती है। खोवा मिठाई के साथ अन्य दुग्ध उत्पादों में मिलावट को रोकने का सबसे प्रभावी तरीका यही है कि कच्चा माल उपलब्ध कराने वाले अर्थात् दुग्ध उत्पादक किसानों और डेयरी संचालकों को आगे आना होगा। किसान और उनका संगठन.. किसान उत्पादक संघ (एफपीओ) मिलावट के खिलाफ एकजुट होकर इस बुराई को काफी हद तक ठीक कर सकते हैं।

किसान, किसानों का समूह - एफ.पी.ओ. और डेयरी संचालक अपने - अपने स्तर पर ही शुद्ध खोवा और दुग्ध उत्पाद बनाने के लिए स्वेच्छा से आगे आ सकते हैं। बड़े कस्बे, तहसील और जिला मुख्यालय पर उपभोक्ताओं को शुद्ध दुग्ध उत्पादों की आपूर्ति के लिए किसान / किसान उत्पादक संगठन पहल कर सकते हैं। सोशल मीडिया ग्रामीण और दूर दराज के क्षेत्रों में भी आसानी से उपलब्ध है। प्रचार - प्रसार के लिए इस सशक्त माध्यम का उपयोग कर उपभोक्ताओं तक मिलावट रहित खाद्य पदार्थों की जानकारी आसानी से पहुँचाई जा सकती है। प्रत्येक शहर में किसान उत्पादक संघ, किसानों के छोटे - छोटे समूह, स्वयं सहायता समूह शुद्ध उत्पाद उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लें तो यह स्थायी रोजगार का भी साधन बन सकता है। इससे उपभोक्ताओं को शुद्ध खाद्य सामग्री तो मिलेगी ही, मिलावट करने वालों के खिलाफ एक कारगर उपाय सिद्ध हो सकता है।

अकेलापन और अवसाद

नई सदी की सबसे बड़ी चुनौती

● कुमार सिद्धार्थ

आपने कभी सोचा है कि अकेलापन सिर्फ एक भावनात्मक अनुभव नहीं, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के लिए उतना ही हानिकारक हो सकता है जितना धूम्रपान या मोटापा? बुजुर्गों में यह हृदय रोग का कारण बन सकता है, और मजबूत सामाजिक संबंध मस्तिष्क के स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। एक शोध समीक्षा बताती है कि 18 से 29 वर्ष की उम्र में अकेलापन अपने चरम पर होता है। हर तीन में से एक युवा इस अनुभव से गुजरता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। वास्तव में, 2024 के एक अध्ययन में पाया गया कि अकेलेपन से आत्महत्या के जोखिम को 16 गुना तक बढ़ा सकता है।

यही नहीं, हार्वर्ड की एक रिपोर्ट बताती है कि 18-25 वर्ष के हर तीन में से एक युवा अकेला महसूस करता है, और उनमें से आधे से ज्यादा ने यह माना कि उनके जीवन में उद्देश्य या अर्थ की कमी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, हर साल वैश्विक स्तर पर 8 लाख लोग आत्महत्या करते हैं, जबकि आत्महत्या का प्रयास करने वालों की संख्या इससे लगभग 20 गुना अधिक होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी मानता है कि अकेलेपन और सामाजिक अलगाव की भावना आत्महत्या के प्रमुख जोखिम कारकों में से एक हो सकती है।

अब ज़रा वृद्धावस्था की ओर देखिए। शोध बताते हैं कि अकेलेपन से डिमेंशिया का खतरा 31 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। 'नेचर मेंटल हेल्थ' में प्रकाशित एक रिपोर्ट कहती है कि जो लोग अकेलेपन से जूझते हैं, उनमें भूलने की बीमारी (डिमेंशिया) होने की संभावना अधिक होती है। फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर मार्टिना लुचेती बताती हैं कि सामाजिक संपर्क की कमी और कम दोस्त होने से मेमोरी लॉस यानी याददाश्त खोने की समस्या बढ़ सकती है।

अब सवाल उठता है कि क्या यह सिर्फ मानसिक स्वास्थ्य तक सीमित है? नहीं। 2018 के एक अध्ययन ने दिखाया कि अकेलापन स्ट्रोक का खतरा 32 फीसदी और कोरोनरी हार्ट डिजीज का खतरा 29 फीसदी तक बढ़ा सकता है। जब लोग अकेला



महसूस करते हैं, तो तनाव बढ़ जाता है, जिससे हार्ड बीपी और सूजन जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं।

शोध बताते हैं कि यदि अकेलेपन को कम किया जाए, तो अवसाद के मामलों में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। इसके लिए हमें सामुदायिक और व्यक्तिगत स्तर पर सक्रिय प्रयास करने होंगे। जब कोई व्यक्ति सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेता है या सामाजिक समूहों से जुड़ता है, तो वह खुद को अधिक जुड़ा हुआ महसूस करता है। मनोवैज्ञानिक परामर्श और थेरेपी भी उन लोगों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है, जो लंबे समय से अकेलेपन का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफॉर्मों का सही उपयोग करके परिवार और दोस्तों से जुड़े रहना, भावनात्मक मजबूती प्रदान कर सकता है। ऐसे में, सामाजिक अलगाव और अकेलापन स्वास्थ्य और सामाजिक नीति अनुसंधान के महत्वपूर्ण विषय बन गए हैं।

दुनिया के कुछ देशों ने नई सदी के इस संकट को पहचाना है। अमेरिकी सरकार ने अकेलापन,

सामाजिक अलगाव और सामाजिक संपर्क बढ़ाने के समाधान के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया है। अमेरिकी सरकार की तरफ से पिछले साल मई में जारी एक रिपोर्ट कहती है कि महामारी से पहले भी देश के वयस्कों की लगभग आधी आबादी औसत स्तर के अकेलेपन से जूझ रही थी। डेनमार्क सरकार ने भी अकेलेपन को कम करने के लिए एक राष्ट्रीय पहल शुरू की है। इसमें सामुदायिक भागीदारी को

अकेलापन अब सिर्फ भावनात्मक अनुभव नहीं रहा, बल्कि यह धूम्रपान और मोटापे जितना घातक स्वास्थ्य संकट बन चुका है। यह युवाओं में आत्महत्या के जोखिम को कई गुना बढ़ाता है और बुजुर्गों में हृदय रोग व डिमेंशिया का बड़ा कारण बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे गंभीर वैश्विक स्वास्थ्य समस्या मानते हुए सामाजिक जुड़ाव को प्राथमिकता देने पर जोर दिया है।

बढ़ावा देने और सामाजिक एकांत के प्रभावों को कम करने पर जोर दिया गया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक गंभीर जन स्वास्थ्य समस्या के रूप में स्वीकार किया है, जो दुनिया की एक चौथाई आबादी को प्रभावित कर रही है। यह केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं, बल्कि एक ऐसी स्वास्थ्य चुनौती है, जो दीर्घकाल में कई शारीरिक और मानसिक बीमारियों को जन्म दे सकती है। इससे निपटने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक वैश्विक आयोग की घोषणा की। इस आयोग में कुल 11 सदस्य शामिल हैं, जिन्हें तीन महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं वैश्विक स्तर पर सामाजिक जुड़ाव को प्राथमिकता देने के लिए एक स्पष्ट एजेंडा तैयार करना, अकेलेपन और सामाजिक अलगाव के दुष्प्रभावों को लेकर जागरूकता फैलाना, साक्ष्य-आधारित समाधानों के लिए विभिन्न देशों, संगठनों और नीति-निर्माताओं के साथ सहयोग करना।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह कदम अकेलेपन को एक गंभीर स्वास्थ्य संकट के रूप में पहचानने और इसे कम करने के लिए टोस प्रयासों को सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह आयोग दुनिया भर में सामाजिक संबंधों को मजबूत करने और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके सकारात्मक प्रभावों को बढ़ावा देने का काम करेगा।

भारत में अकेलेपन और अवसाद से निपटने के लिए वर्तमान में कोई विशिष्ट राष्ट्रीय नीति नहीं बनी है, जबकि कई अन्य देशों ने इस दिशा में पहल की है। 2015-2016 में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी 'नेशनल मेंटल हेल्थ सर्वे' में भी अकेलेपन का जिक्र नहीं किया गया। हालांकि, मानसिक स्वास्थ्य को संबोधित करने के लिए सरकार ने कई पहलें की हैं। 2017 में, 'मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम' लागू किया गया, जो मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को सुनिश्चित करता है और मानसिक रोगियों के अधिकारों की रक्षा करता है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार और सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। वहीं वर्तमान में, भारत में बुजुर्गों से संबंधित दो राष्ट्रीय नीतियाँ मौजूद हैं, लेकिन उनमें भी अकेलेपन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। 1999 में जारी 'राष्ट्रीय बुजुर्ग नीति' में अकेलेपन का जिक्र सिर्फ एक बार हुआ है।

अकेलेपन और सामाजिक अलगाव की बढ़ती समस्या को देखते हुए, भारत में भी एक समग्र नीति की आवश्यकता महसूस की जा रही है, जो मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक सहभागिता और सामुदायिक समर्थन को बढ़ावा देने पर केंद्रित हो। इन नीतियों में सामुदायिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करना, मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देना, और सामाजिक समर्थन नेटवर्क को मजबूत करना शामिल हो सकता है। इससे न केवल मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बढ़ेगी, बल्कि समाज में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता भी बढ़ेगी। सवाल सिर्फ यह है कि हम इसके लिए कितने तैयार हैं?

(संप्रे)



- हरीश बाथम
 - अभय प्रताप सिंह तोमर
 - डॉ. सचिन कुमार सिंह
 - डॉ. मांडवी श्रीवास्तव
- Jiharish093@gmail.com

अगेती मटर की विशेषताएँ

- जल्दी पकने वाली किस्में, 60-75 दिनों में तैयार।
- बाजार में सर्दियों की शुरुआत (नवंबर-दिसंबर) में ही हरी मटर उपलब्ध हो जाती है।
- फसल जल्दी निकलने से किसान रबी की अन्य फसलें जैसे गेहूँ, चना या आलू भी ले सकते हैं।
- उपज अच्छी तथा दाम ऊँचे, इसलिए लाभ दुगुना।

प्रमुख किस्में

अर्का अजीत, अर्का प्रगति, अर्का कार्तिक, IPFD-1, अजीत-1, पी.ई.एस. 10, पंत मटर 155, काशी अगेती, काशी पूर्वी, काशी नंदिनी,



काशी शक्ति, पंत मटर 155, अर्ली बैजर, आर्केल, पंत मटर 13, जवाहर मटर आदि। अगेती मटर की कुछ उन्नत किस्में हैं।

पोषण और खाद प्रबंधन

मटर दलहनी फसल होने के कारण वायुमंडल से नाइट्रोजन स्थिर करती है, फिर भी बेहतर वृद्धि और उत्पादन के लिए पोषण एवं खाद प्रबंधन जरूरी है। बुवाई से पहले खेत में 15-20 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद डालें जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे। रासायनिक उर्वरकों में सामान्यतः 20 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फॉस्फोरस और 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर दें, जिसमें आधी नाइट्रोजन और पूरा फॉस्फोरस-पोटाश बुवाई के समय बेसल डोज के रूप में दें और शेष नाइट्रोजन 25-30 दिन बाद टॉप ड्रेसिंग करें। इसके साथ ही राइजोबियम तथा फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु (पीएसबी) से बीज उपचार करने पर दाने की उपज और गुणवत्ता दोनों बढ़ती

अगेती मटर की खेती किसानों के लिए लाभकारी

मटर भारत में सबसे लोकप्रिय दलहनी व सब्जी फसलों में से एक है। इसमें प्रोटीन (20-22 प्रतिशत), विटामिन और खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। मटर का उपयोग हरी सब्जी, दाने और पशु चारे के रूप में किया जाता है। यह दलहनी फसल होने के कारण वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करती है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है। आजकल अगेती (early) मटर की खेती किसानों के लिए विशेष अवसर लेकर आई है। यह किस्में कम समय में तैयार होती हैं और सर्दियों की शुरुआत में ही बाजार में पहुँच जाती हैं, जहाँ हरी मटर की कीमत सामान्य से दोगुनी-तिगुनी तक मिलती है। अगेती मटर की खेती से तात्पर्य मटर की ऐसी खेती से है जो सामान्य बुवाई के मौसम (नवंबर-दिसंबर) से पहले, यानी मटर की खेती का समय सितंबर माह के अंत से अक्टूबर के मध्य तक होता है। यह खेती विशेष रूप से उन किस्मों की होती है जो कम समय में पककर तैयार हो जाती हैं मटर की किस्म का चुनाव करते समय मिट्टी, जलवायु और पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

है। सल्फर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर देने से भी दानों की गुणवत्ता और प्रोटीन मात्रा में सुधार होता है।

बुवाई का सही समय और तरीका

अगेती मटर की बुवाई का सही समय सितंबर माह के अंत से अक्टूबर के मध्य तक माना जाता है, क्योंकि इस अवधि में तापमान अनुकूल रहता है और फसल जल्दी तैयार होकर ऊँचे दाम दिलाती है। बुवाई के लिए बीज की मात्रा 70-80 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है। बुवाई कतारों में करें, जहाँ कतार से कतार की दूरी लगभग 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेंटीमीटर रखी जाती है। बीज बोने से पहले उन्हें राइजोबियम और ट्राइकोडर्मा से उपचारित करें ताकि जड़ों में गांठें अच्छी तरह बनें और रोगों से सुरक्षा मिले। बीजों को 3-5 सेंटीमीटर गहराई पर बोना उचित होता है, जिससे अंकुरण समान और मजबूत होता है।

अगेती मटर की खेती में सिंचाई प्रबंधन

- मटर में सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह रबी मौसम की फसल है।
- पहली सिंचाई - बुवाई के 15-20 दिन बाद करें, जब पौधों की जड़ें जम रही हों।
- दूसरी सिंचाई - फूल आने की अवस्था में करें; यह सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि नमी की कमी से फूल झड़ जाते हैं।
- तीसरी सिंचाई - फलियों के बनने के समय दें; इससे फलियों का आकार और दाना भराव अच्छा होता है।
- चौथी सिंचाई - आवश्यकता पड़ने पर दानों के भरने की अवस्था में करें।
- ध्यान रखें कि खेत में पानी कभी भी खड़ा

न हो, क्योंकि इससे जड़ सड़न और फ्यूजेरियम विल्ट जैसी समस्याएँ आती हैं।

- हल्की और समय पर सिंचाई से उपज 20-25 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।
- अगेती मटर में खरपतवार प्रबंधन-
- मटर की फसल में शुरुआती 30-40 दिन सबसे महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इस समय खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं और पोषक तत्व, नमी व धूप छीन लेते हैं।
- पहली निराई-गुड़ाई - बुवाई के 20-25 दिन बाद।
- दूसरी निराई-गुड़ाई - लगभग 40 दिन पर करें।
- मल्टिंग - खेत में पुआल/फसल अवशेष बिछाने से खरपतवार की वृद्धि कम होती है और

नमी भी बनी रहती है।

रासायनिक नियंत्रण - बुवाई के तुरंत बाद पेंडीमेथालिन 1.0 लीटर प्रति हेक्टेयर 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

● खरपतवार नियंत्रण करने से फसल की पैदावार में 15-20 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है।

अगेती मटर की तुड़ाई और उपज
पहली तुड़ाई का समय- अगेती मटर की किस्में बुवाई के 60-75 दिन बाद तोड़ाई योग्य हो जाती हैं।

तोड़ाई की अवस्था- फलियाँ जब हरी, कोमल और दाने दूधिया अवस्था में हों तब तोड़ाई करें, क्योंकि इसी अवस्था में दाने स्वादिष्ट और बाजार में अधिक पसंद किए जाते हैं।

तोड़ाई की विधि- फलियों को हाथ से सावधानीपूर्वक तोड़ें ताकि पौधों को नुकसान न हो और अगली तुड़ाई भी अच्छी हो।

तुड़ाई की आवृत्ति- मटर की फलियाँ एकसाथ नहीं पकती, इसलिए 3-4 बार अंतराल से तुड़ाई करनी पड़ती है।

हरित फली उपज- 80-100 किंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो सकती है, जो किस्म और प्रबंधन पर निर्भर करती है।

दाना उपज- यदि दाने सुखाकर उपयोग किए जाएँ तो 20-25 किंटल प्रति हेक्टेयर उपज मिल सकती है।

बाजार मूल्य- अगेती मटर बाजार में जल्दी आने के कारण सामान्य मटर से ऊँचे दाम (रु. 50-70 प्रति किलो तक) दिलाती है।

भंडारण- हरी फलियाँ जल्दी खराब हो जाती हैं, इसलिए तुरन्त बिक्री करें या ठंडी जगह पर सुरक्षित रखें। दाने सुखाकर लंबे समय तक भंडारित किए जा सकते हैं।

अगेती मटर में कीट एवं रोग प्रबंधन

मुख्य कीट

एफिड (महु)- पत्तियों व कोमल फलियों का रस चूसते हैं जिससे पौधे कमजोर होकर पीले पड़ जाते हैं।



नियंत्रण- नीम आधारित कीटनाशी 5 प्रतिशत या इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली./लीटर पानी का छिड़काव करें।

थ्रिप्स- पत्तियों पर सिल्वरिंग व सिकुड़न पैदा करते हैं।



नियंत्रण - थायोमैथोक्साम या स्पिनोसैड का छिड़काव करें।

कटवर्म- पौधों को जड़ से काटकर गिरा देते हैं।

नियंत्रण - खेत की अच्छी जुताई करें और लार्वा दिखाई देने पर क्लोरपायरीफॉस का प्रयोग करें।

मुख्य रोग

पाउडरी मिल्ड्यू- पत्तियों व तनों पर सफेद



पाउडर जैसी परत जम जाती है।

नियंत्रण - गंधक 0.2 प्रतिशत या कैराथेन का छिड़काव करें।

जंग - पत्तियों पर भूरे/गहरे धब्बे दिखाई देते हैं।

नियंत्रण- मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत या हेक्साकोनाजोल का छिड़काव करें।

पीला मोजेक - पत्तियाँ पीली होकर सिकुड़ जाती हैं, रोग एफिड से फैलता है।



नियंत्रण - रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें, बीज उपचार करें और एफिड का नियंत्रण करें।

जड़ सड़न/विल्ट- पौधे मुरझा जाते हैं और सूख जाते हैं।

नियंत्रण - बीज उपचार ट्राइकोडर्मा से करें और खेत में जलभराव न होने दें।

अक्टूबर में लगाएं करौंदे के पौधे... खूबसूरती को लगेगे चांद



जी हां ! यदि आप घर में ही गार्डनिंग करते हैं तो अक्टूबर माह की शुरुआत में ही करौंदे के पौधे लगा सकते हैं...ये पौधे न केवल आपके गार्डन में चार चांद लगा देंगे वहीं ताजे करौंदे भी खाने के लिए मिलेंगे। कृषि जानकारों के अनुसार अक्टूबर का महीना करौंदे के पौधे लगाने के लिए श्रेष्ठ रहता है।

अक्टूबर का महीना इसे उगाने के लिए इसलिए सही माना जाता है क्योंकि इस दौरान बारिश होने के कारण मिट्टी में नमी बनी रहती है जो कि करौंदे के पौधे की ग्रोथ में मदद करता है। करौंदे का पौधा एक छोटा, झाड़ीदार पौधा है जो कि आसानी से घर में उगाया जा सकता है। इसके फलों में मौजूद विटामिन C, आयरन (Iron), और अन्य पोषक तत्व इसे शरीर के लिए बेहद ही फायदेमंद बनाते हैं। आप चाहें तो अपने बगीचे में लगे इसके स्वादिष्ट और शुद्ध फलों का इस्तेमाल जूस, अचार और चटनी बनाने के लिए भी कहा जाता है। इसके अलावा इसका इस्तेमाल कई तरह की बीमारियों में भी किया जा सकता है। बता दें कि, करौंदे में मौजूद फाइबर शरीर के पाचन तंत्र को सुधारने के साथ ही शरीर की रोग

प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसके अलावा इसके सेवन से डायबिटीज और ब्लड प्रेशर को भी सुधारने में मदद मिलता है। करौंदे के पौधे को उगाने के लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी को ही लें और उसमें कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल जरूर करें। इसके बाद नर्सरी से लाए पौधों को मिट्टी में थोड़ी गहराई में लगाएं। ध्यान रहे कि पौधों के बीच की दूरी 4 से 5 फीट और कतार से कतार की दूरी 6 से 8 फीट हो। बता दें कि, करौंदे के पौधों को बढ़ने के लिए धूप की जरूरत होती है लेकिन पौधे को बहुत ज्यादा धूप से बचायें। करौंदे के पौधे को रोपाई के बाद खास खयाल की जरूरत होती है क्योंकि ये एक झाड़ीदार पौधा होता है इसलिए समय-समय पर इसकी कटाई जरूरी है। झाड़ीदार पौधा होने के कारण करौंदे के पौधे में कीट लगने का खतरा भी रहता है, जिनमें एफिड्स, थ्रिप्स, और सफेद मक्खियों जैसे कीट शामिल हैं। इन कीटों से पौधों को बचाने के लिए पौधे पर नीम तेल या साबुन के घोल का स्प्रे करें। बता दें कि, नर्सरी से पौधा लाकर लगाने पर आपको 3 से 6 महीने में फल मिलना शुरू हो जाते हैं।

विद्या (थूजा): कृषि और स्वास्थ्य दोनों में उपयोगी

कृषि महाविद्यालय खंडवा के अधिष्ठाता डॉ. दीपक हरि रानडे के शब्दों में—

है सजावटी पौधा, देता बड़ा ज्ञान, गुण हैं इतने, सब लें संज्ञान,

एक नाम विद्या भी इसका, कहें सब मानद विद्वान,
अंग्रेजी नाम है थूजा, इस सा नहीं कोई और दूजा,
मोरपंखी है इसका और नाम, वातावरण को शुद्ध करना इसका काम,

घना होकर प्राकृतिक बागड़ बनाये, बनती कई उत्कृष्ट दवायें,

बच्चे पतियों को पुस्तक में रख, कामना करते पाने की विद्या,

यही वो परम मित्र है, थूजा कहो या विद्या

कृषि में महत्व

थूजा पौधा सामान्यतः सजावटी पौधे के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसका कृषि में भी विशेष महत्व है। इसे प्राकृतिक बाड़ के रूप में प्रयोग किया जा सकता है, जिससे फसलों को तेज हवाओं से सुरक्षा मिलती है। इसकी घनी पतियाँ मिट्टी में नमी संरक्षण और पर्यावरणीय आर्द्रता बनाए रखने में सहायक हैं।

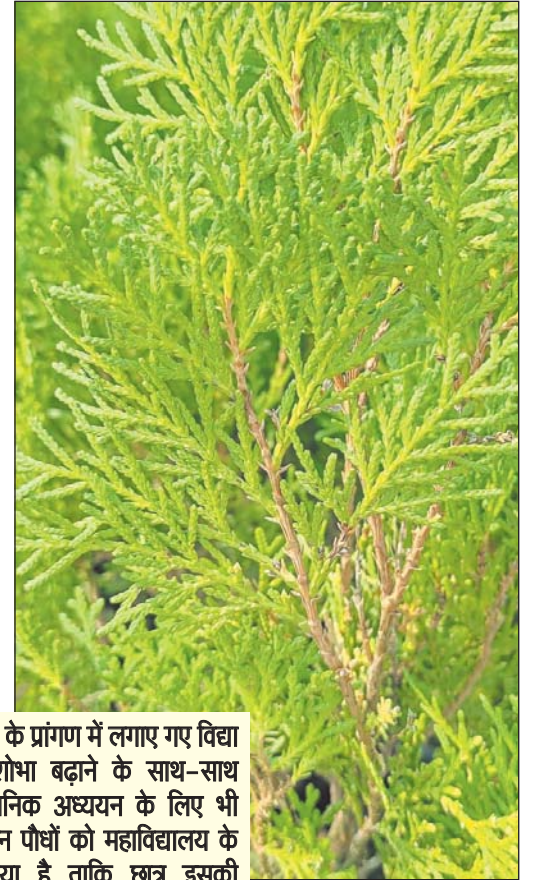
शोध स्तर पर इसे ट्रेप क्रॉप के रूप में भी अध्ययन किया जा रहा है, जिससे कीट प्रबंधन में इसके संभावित योगदान को समझा जा सके।

औषधीय उपयोग

होम्योपैथी में थूजा का उपयोग त्वचा रोगों, सर्दी-जुकाम, और श्वसन संबंधी विकारों के उपचार में किया जाता है। इसका अर्क रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक माना गया है। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में इसे शरीर शुद्धि और रोग निवारण के लिए भी प्रयोग किया जाता रहा है।

धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व

थूजा का नाम ग्रीक शब्द "thuía" से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'धूप' या 'यज्ञ' में प्रयुक्त सामग्री। प्राचीन काल में इसकी लकड़ी और पतियाँ जलाकर वातावरण को शुद्ध किया जाता था। भारत में इसे 'विद्या' और कई स्थानों पर 'मोरपंखी' भी कहा जाता है। यह पवित्रता और शुद्धि का प्रतीक माना गया है।



कृषि महाविद्यालय खंडवा के प्रांगण में लगाए गए विद्या (थूजा) पौधे परिसर की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और वैज्ञानिक अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं। इन पौधों को महाविद्यालय के विभिन्न हिस्सों में रोपा गया है ताकि छात्र इसकी विशेषताओं को नज़दीक से समझ सकें।

पर्यावरणीय महत्व

थूजा पौधा पूरे वर्ष

हरा-भरा रहता है। यह परिसर की सूक्ष्म जलवायु संतुलन बनाए रखने में सहायक है। यह कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर वायु को शुद्ध करता है और प्रदूषण नियंत्रण में योगदान देता है।

'विद्या (थूजा) पौधे का रोपण हमारे लिए केवल सौंदर्य का साधन नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिक अध्ययन का विषय भी है। इस पौधे में पर्यावरणीय स्थिरता, औषधीय क्षमता और संभावित कीट प्रबंधन जैसे कई पहलुओं पर शोध की संभावना है। विद्यार्थियों को इसके माध्यम से यह समझने का अवसर मिलेगा कि पौधे केवल जैव विविधता का हिस्सा नहीं, बल्कि कृषि और स्वास्थ्य विज्ञान के लिए भी अत्यंत उपयोगी साधन हैं।'

- डॉ. दीपक हरि रानडे
- डॉ. मनोज कुमार कुरील
- डॉ. स्मिता अग्रवाल

'जिन पेड़ों के नीचे बैठ के दादा पढ़े, आज उई फिर से जिंदा होवत है...'

निमाड़ की मिट्टी में कुछ खास है - इसमें माही, तासी के संग बहती विरासत, लोक परंपराओं की गूंज और हरियाली से उपजा अपनापन बसता है। यहीं, खंडवा के बी. एम. कृषि महाविद्यालय में कुछ ऐसे वृक्षों को संजीवनी दी जा रही है, जिनके नीचे कभी गाँव के बुजुर्ग बीड़ी सुलगाते चर्चा करते, बच्चे लट्टू घुमाते और महिलाएं चूल्हे के लिए पत्ते बटोरती थीं। इन्हीं विलुप्तप्राय वृक्षों में से एक रोहणी जैसे वृक्ष नए संदर्भों में पुनर्जीवित हो रहे हैं—शिक्षा के साधन बनकर, जलवायु संकट के खिलाफ ढाल बनकर और निमाड़ की आत्मा के प्रतीक बनकर।

रोहणी वृक्ष: वनस्पति धरोहर की पुनर्खोज प्राकृतिक वनस्पतियों की विविधता भारत की सबसे बड़ी धरोहरों में से एक है। दुर्भाग्यवश, अनेक ऐसे मूल वृक्ष हैं जो अब आमदृष्टि से ओझल

हरियर साक्षी : परंपरागत वृक्षों का संरक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा की मिसाल

हो गए हैं—या तो तेजी से हो रहे वनों की कटाई के कारण, या आधुनिकता की अंधी दौड़ में उनके उपयोग को भुला दिए जाने से। ऐसे ही एक दुर्लभ एवं पारंपरिक वृक्ष का नाम है रोहणी। कृषि महाविद्यालय, खंडवा ने इस वृक्ष को संरक्षित कर वनस्पति संरक्षण और पारंपरिक ज्ञान के पुनरुद्धार की दिशा में एक अहम कदम उठाया है। निमाड़ी में कहावत है 'रोहणी जैसे जीम, सुख के थारा जावे नी' यानी मुसीबत में भी टस से मस ना हो।

यह वृक्ष भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों — विशेषकर राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और पंजाब में पाया जाता है। यह श्रेणी बद्ध रूप से संकटग्रस्त (vulnerable) प्रजातियों में गिना जाता है।

रोहणी एक मध्यम आकार का वृक्ष है जिसकी ऊँचाई लगभग 6 से 10 मीटर तक हो सकती है।



इसकी छाल मोटी व दरारदार होती है, और पत्ते एकवर्ती (simple) होते हैं। वसंत ऋतु में इसमें

खूबसूरत नारंगी-लाल रंग के फूल आते हैं, जो इसकी शोभा को और बढ़ा देते हैं।

इस वृक्ष की लकड़ी हल्की, मजबूत और टिकाऊ होती है, जिस कारण अतीत में इसका प्रयोग फर्नीचर, यंत्र, रथ, और धार्मिक कलाकृतियों में होता था।

औषधीय और पारंपरिक महत्व: रोहणी की छाल आयुर्वेद में रक्तविकार, पीलिया और चर्म रोगों के उपचार में उपयोग की जाती है, इसकी लकड़ी जीवाणुनाशक मानी जाती है, पारंपरिक ग्रामीण समाज में इसे वर्षा संकेतक वृक्ष माना जाता था — मान्यता थी कि इसके फूलों की अधिकता वर्षा के अच्छे संकेत देती है।

कृषि महाविद्यालय की भूमिका
महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रानडे ने जानकारी दी कि खंडवा क्षेत्र, जहाँ प्राकृतिक रूप से अनेक देसी वृक्षों की जैव विविधता रही है, अब धीरे-धीरे शहरीकरण और भू-उपयोग परिवर्तन के कारण वनस्पति संकट में आ गया है। ऐसे में कृषि महाविद्यालय, खंडवा रोहणी वृक्ष का रोपण और संरक्षण करने का प्रयास कर रहा है।



● गरिमा सिंह ● पूनम शर्मा ● डॉ आकांक्षा शर्मा
● अनूप शुक्ला सहायक प्रोफेसर

तालाबों में अजोला उगाने पर चरण- दर-चरण मार्गदर्शिका

● कटाई के लिए अजोला की वांछित मात्रा के आधार पर तालाब का आकार निर्धारित करें। लगभग 2 मीटर लंबाई और 1 मीटर चौड़ाई वाला तालाब छोटे पैमाने पर खेती के लिए उपयुक्त है। तालाब की संरचना बनाने के लिए ज़मीन को समतल करें और ईंटें बिछाएँ।

● अवरोध प्रदान करने के लिए तालाब के तल पर पुरानी प्लास्टिक की बोरियाँ या चादरें रखें।

● पूरे तालाब को 150 गेज मोटाई की टिकाऊ प्लास्टिक शीट से ढक दें।

● प्लास्टिक शीटों को अपनी जगह पर बनाए रखने के लिए साइड की दीवारों पर ईंटें लगाकर उनके किनारों को सुरक्षित करें।

● लगभग 25 किलो क्लीया फैलाएं तालाब पर समान रूप से।

● 5 किलो गोबर और 30 ग्राम राजफॉस या मसूरी फॉस का मिश्रण मिट्टी पर समान रूप से लगाएं।

● तालाब में पानी की गहराई लगभग 10 सेमी बनाए रखें।

● गणना करें कि प्रति वर्ग मीटर तालाब में 500 ग्राम अजोला कल्चर की आवश्यकता होती है।

● 1-2 सप्ताह के भीतर, अजोला तालाब को पूरी तरह से ढक देगा, जो दर्शाता है कि यह कटाई के लिए तैयार है।

पशुधन चारे के रूप में अजोला की खेती के लिए सर्वोत्तम अभ्यास

भारत में प्राकृतिक संसाधन विकास परियोजना (एनएआरडीपी) ने एक ऐसी खेती तकनीक

क्या है अजोला खेती?

अजोला की खेती में जलीय फर्न की एक अनोखी प्रजाति उगाना शामिल है, जिसे मच्छर, डकवीड, फेयरी मॉस और वॉटर फर्न जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। विशिष्ट फर्न के विपरीत, अजोला प्रजाति का एक विशेष और अत्यधिक छोटा रूप होता है, जो पारंपरिक फर्न के बजाय डकवीड या मॉस जैसा दिखता है। एक उल्लेखनीय प्रजाति, एजोला फ़िलिकुलोइड्स का एक प्रकाशित संदर्भ जीनोम भी है। दिलचस्प बात यह है कि इओसीन काल के दौरान, अजोला प्रचुर मात्रा में विकसित हुआ और महत्वपूर्ण कार्बन को अवशोषित किया। अजोला को आर्द्रभूमियों, मोटे पानी की झीलों और खाइयों में एक आक्रामक पौधा माना जा सकता है। इन पारिस्थितिक तंत्रों में इसकी उपस्थिति जैव विविधता और जलीय वातावरण की समग्र कार्यप्रणाली को काफी हद तक बदल सकती है।

विकसित की है जो पशुपालकों के लिए सरल और किफायती है। यह नाडेप विधि का सारांश दिया गया है-

● **जल निकाय बनाना** : सिलपॉलिन शीट को पेड़ की जड़ों से बचाने के लिए 2 × 2 × 0.2 मीटर का गड्ढा खो दें और इसे प्लास्टिक की बोरियों से ढक दें। चादर पर 10-15 किलोग्राम छनी हुई उपजाऊ मिट्टी समान रूप से फैलाएं।

● **घोल लगाना** : 2 किलो गोबर, 30 ग्राम सुपर फॉस्फेट और 10 लीटर पानी से बना घोल शीट पर डालें। स्तर को लगभग 10 सेमी तक बढ़ाने के लिए अधिक पानी डालें।

● **अजोला का परिचय**- प्लेस ओ और शुद्ध अजोला कल्चर तेजी से बढ़ता है और गड्ढे को भर देता है जिससे प्रतिदिन 50 की फसल प्राप्त होती है। 0.5-1 किलोग्राम ताजा और शुद्ध अजोला कल्चर को पानी में डालें। यह तेजी से बढ़ेगा और 10-15 दिनों के भीतर गड्ढे को भर देगा, जिससे प्रतिदिन 500-600 ग्राम की फसल प्राप्त हो सकेगी।

● **पोषक तत्व प्रबंधन**- 20 का मिश्रण डालें। अजोला गुणन को बढ़ावा देने के लिए हर पांच दिन में जी सुपर फॉस्फेट और 1 किलो गाय का गोबर, सूक्ष्म पोषक तत्व मिश्रण का साप्ताहिक जोड़ खनिज सामग्री को बढ़ा सकता है।

- भीड़भाड़ को रोकने के लिए अतिरिक्त बायोमास को नियमित रूप से हटाना।
- यदि आवश्यक हो तो छाया के साथ तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से नीचे बनाए रखें।
- 5.5 और 7 के बीच पीएच का परीक्षण करना और उसे बनाए रखें।
- बिस्तर की मिट्टी और पानी को समय-समय पर बदलें।
- नाइट्रोजन निर्माण को रोकें, हर छह माह में बिस्तर की सफाई करें।
- अजोला को ताजे पानी में धोएं।

अजोला खेती की व्यावसायिक क्षमता : बाजार विश्लेषण और अवसर

बढ़ती मांग : बढ़ती मांग जैविक एवं टिकाऊ कृषि के लिए प्रथाओं ने एक अनुकूल बाजार तैयार किया है। इसके प्राकृतिक उर्वरक गुण और वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करने की क्षमता इसे एक बनाती है किसानों के लिए आकर्षक विकल्प।

पशुधन आहार : अजोला प्रोटीन से भरपूर होता है, विटामिन और खनिज, इसे पशुओं के लिए एक पौष्टिक आहार बनाते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले पशु आहार की बढ़ती मांग अजोला की खेती के लिए एक आकर्षक बाजार अवसर प्रस्तुत करती है।

जैव उर्वरक उत्पादन : अजोला की नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने की क्षमता इसे एक उत्कृष्ट जैव उर्वरक बनाती है। जैविक उर्वरकों की मांग बढ़ रही है, जिससे अजोला- आधारित जैव उर्वरकों के लिए संभावित बाजार उपलब्ध हो रहा है।

अपशिष्ट जल उपचार : पोषक तत्वों और प्रदूषकों को अवशोषित करने की क्षमता के कारण अजोला अपशिष्ट जल उपचार में प्रभावी है। इससे अपशिष्ट जल उपचार संयंत्रों और पर्यावरण-अनुकूल जल प्रबंधन प्रणालियों में अजोला की खेती के अवसर खुलते हैं।

टिकाऊ कृषि : मिट्टी की उर्वरता में सुधार करने और सिंथेटिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने की अपनी क्षमता के साथ, एजोला टिकाऊ कृषि सिद्धांतों के अनुरूप है। यह इसे पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों के बढ़ते बाजार में अच्छी स्थिति में रखता है।

रखने और अतिरिक्त पोषक तत्वों के निर्माण को रोकने में मदद करता है।

मृदा नवीनीकरण- मौजूदा मिट्टी को हटा दें तालाब में समय- समय पर 5 किलो ताजी मिट्टी डालें। यह अजोला के विकास के लिए पोषक तत्वों से भरपूर वातावरण सुनिश्चित करता है।

तालाब की सफाई और दोबारा शुरू करना- हर छह महीने में तालाब को खाली करें और नई संस्कृति और मिट्टी के साथ अजोला की खेती फिर से शुरू करें। यह किसी भी संदूषण या कीट/बीमारी के संचय को रोकने में मदद करता है।

लघु- स्तरीय प्रणालियों में अजोला विकास को बढ़ावा देना: घरेलू बागवानों के लिए युक्तियाँ

पर्याप्त धूप प्रदान करें : अजोला पूर्ण सूर्य के प्रकाश में पनपता है, इसलिए सुनिश्चित करें कि इसे प्रत्येक दिन कम से कम 4-6 घंटे सीधी धूप मिले।

पानी का तापमान बनाए रखें : अजोला 20-30°C (68- 86°F) के बीच पानी का तापमान पसंद करता है। पानी को गर्म रखें, खासकर ठंड के महीनों में।

पानी के पीएच को नियंत्रित करें : एजोला 6.5-7.5 के बीच थोड़ा अम्लीय से लेकर तटस्थ पीएच स्तर को प्राथमिकता देता है। नियमित रूप से पानी का परीक्षण करें और यदि आवश्यक हो तो समायोजन करें।

पोषक तत्वों की पूर्ति : अजोला को अतिरिक्त पोषक तत्वों से लाभ होता है। इसकी वृद्धि को बढ़ाने के लिए जैविक खाद या कम्पोस्ट चाय मिलाने पर विचार करें।

नियमित कटाई : भीड़भाड़ को रोकने और नई वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से अजोला की कटाई करें।

अजोला उत्पादन बढ़ाने के लिए युक्तियाँ और तकनीकें

पोषक तत्व अनुपूरण- अजोला वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए हर दो सप्ताह में एक बार 1 किलो गाय का गोबर और 10-20 ग्राम राजफॉस (रॉक फॉस्फेट) डालें।

जल प्रतिस्थापन- तालाब से एक- चौथाई पानी निकालें और इसे हर दो सप्ताह में एक बार नए ताजे पानी से भरें। यह पानी की गुणवत्ता बनाए

अजोला की खेती के लिए इष्टतम स्थितियाँ- तापमान, प्रकाश और पीएच जल अम्लता (पीएच)

● अजोला 3.5 से 10 पीएच रेंज के भीतर जीवित रह सकता है।

● यह 3.5 से कम पीएच वाली अत्यधिक अम्लीय मिट्टी में नहीं उग सकता है।

● IRR12 माध्यम के लिए पसंदीदा पीएच रेंज 5.5 और 6.5 के बीच है।

तापमान

● अजोला तापमान की एक विस्तृत श्रृंखला के प्रति सहनशीलता प्रदर्शित करता है।

● कुछ अजोला प्रजातियाँ -5°C तक के तापमान में भी जीवित रह सकती हैं।

● आमतौर पर 35°C से ऊपर वृद्धि कम हो जाती है, और 45°C से अधिक तापमान के लंबे समय तक संपर्क में रहने से बचा नहीं जा सकता है।

● अधिकांश प्रजातियाँ 18°C और 28°C के बीच तापमान में पनपती हैं, लेकिन कुछ प्रजातियाँ जैसे- पिन्नाटा, मेक्सिकाना और कैरोलिनिआना 30°C तक का तापमान सहन कर सकती हैं।

रोशनी

● अजोला और उसके सहजीवी भागीदार अनाबेना में प्रकाश संश्लेषण और नाइट्रोजन गतिविधि विनियमन में प्रकाश महत्वपूर्ण है।

● वसंत के दौरान उच्च अक्षांशों को छोड़कर, अजोला प्रजातियाँ पूर्ण सूर्य के प्रकाश को कम पसंद करती हैं।

जल निकाय में अजोला वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए जैविक तरीके

पोषक तत्वों से भरपूर पानी- अजोला के विकास को समर्थन देने के लिए उच्च पोषक तत्वों, विशेष रूप से नाइट्रोजन और फास्फोरस के साथ पानी बनाए रखें।

वर्मीकम्पोस्ट अनुप्रयोग- मिट्टी की उर्वरता और पोषक तत्वों को बढ़ाने के लिए वर्मीकम्पोस्ट लागू करें, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से अजोला की वृद्धि को लाभ होता है।

जैविक उर्वरक- जल निकाय को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए गाय के गोबर या मुर्गी खाद जैसे जैविक उर्वरकों का उपयोग करें।

हरी खाद वाली फसलें- जलस्रोत के आसपास फलियाँ जैसे नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले पौधे उगाएँ। पानी में शामिल होने पर, वे नाइट्रोजन छोड़ते हैं, जिससे अजोला के विकास में सहायता मिलती है।

कम्पोस्ट चाय- पोषक तत्वों और पीआर विकास के साथ कंपो पानी से बने कंपो उर्वरक को लागू करें।

मल्लिचंग- पोषक तत्वों की हानि को रोकने और नमी बनाए रखने के लिए जल निकाय के चारों ओर सूखे पत्तों या पुआल जैसी जैविक गीली घास सामग्री का उपयोग करें।

रासायनिक प्रदूषकों से बचें- रासायनिक उर्वरकों, शाकनाशियों और कीटनाशकों को कम करें या समाप्त करें, क्योंकि वे अजोला के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

समस्या-समाधान

समस्या- अलग-अलग मौसम में उगाई जाने वाली गोभी की विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी दें।

समाधान- गोभी की बढ़वार और फूल के बनने एवं विकास के लिए वांछित तापमान पर आधारित फूल गोभी की किस्मों के विकास से अब लगभग पूरे वर्ष फूलगोभी उगाना संभव हो गया है। वर्ष के विभिन्न मौसम के लिए फूलगोभी की उन्नत प्रजातियां व संकर किस्में निम्न: परिपक्वता वर्ग किस्में व संकर बुआई का समय उपलब्धता का समय उपज (कि./हे.) अगोती 1 पूसा मेघना - 100 किंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा कार्तिक संकर - 110 किंटल



प्रति हेक्टेयर, पूसा कार्तिकी - 120 किंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा अश्विनि - 120 किंटल प्रति हेक्टेयर मई के अंत व जून के पहले पखवाड़े में सितम्बर के अंत से अक्टूबर तक; मध्य अगोती पूसा शरद - 250 किंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा हाईब्रिड-2 - 310 किंटल प्रति हेक्टेयर। जुलाई का अंतिम सप्ताह-अगस्त नवम्बर-दिसम्बर मध्य पिछेती पूसा पौषजा- 325 किंटल प्रति हेक्टेयर, अगस्त के अंत से सितम्बर तक दिसम्बर-जनवरी पिछेती या सोबाल पूसा सोबाल के-1- 350 किंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा सोबाल के-25 - 320 किंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा सोबाल फूलगोभी हाईब्रिड-1 सितम्बर-नवम्बर जनवरी-मार्च - 350 किंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या- सामान्यतः गाजर की बुवाई सितम्बर- अक्टूबर में की जाती है, बेमौसम लगाई जाने वाली किस्में बताएं।

समाधान- संस्थान द्वारा विकसित गाजर



की उन्नत प्रजातियों से वर्ष भर पैदावार ली जा सकती है जिससे गाजर की उपलब्धता मई-जून से लेकर नवम्बर से जनवरी तक सुनिश्चित किया जा सकता है। वर्ष के विभिन्न मौसमों के लिए गाजर की उन्नत प्रजातियां व संकर किस्में किस्में बुआई का समय उपलब्ध काल उपज (कि./हे.) पूसा वृष्टि जुलाई-अक्टूबर अक्टूबर-नवम्बर - 180-200 किंटल प्रति हेक्टेयर पूसा रुधिरा, पूसा असिता, पूसा कुल्फी, पूसा वसूदा (संकर) सितम्बर-अक्टूबर नवम्बर-जनवरी - 300-450 किंटल प्रति हेक्टेयर पूसा यमदाग्नि, पूसा नयनज्योति (संकर) सितम्बर-मार्च नवम्बर-अप्रैल - 270-370 किंटल प्रति हेक्टेयर पूसा वृष्टि मार्च-अप्रैल मई-जून - 150-160 किंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या- साल भर मूली लगाना क्या संभव है? उपयुक्त किस्में बताएं।

समाधान - विभिन्न मौसम में उगाई जाने वाली मूली की उन्नत किस्में किस्म बुआई का समय फसल तैयार होने का समय उपज (कि./हे.) पूसा देसी अगस्त के मध्य से अक्टूबर मध्य तक मध्य सितम्बर से मध्य



दिसम्बर तक - 175 किंटल प्रति हेक्टेयर पूसा मृदुला सितम्बर के प्रथम पखवाड़े से मध्य नवम्बर तक अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से जनवरी के पहले पखवाड़े तक - 180 किंटल प्रति हेक्टेयर जेपनीज व्हाइट, पूसा स्वेता, पूसा जामुनी, पूसा गुलाबी दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े से फरवरी तक मध्य फरवरी से अप्रैल के तीसरे सप्ताह तक - 250 किंटल प्रति हेक्टेयर पूसा चेतकी अप्रैल के पहले सप्ताह से मध्य अगस्त तक मई के पहले पखवाड़े से सितम्बर के दूसरे पखवाड़े तक - 170 किंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या- कटहरीय फसलों की नवीन प्रजातियों की जानकारी दें।

समाधान- फसल किस्म उत्पादन

(कि./हे.) लौकी पूसा समृद्धि - 325 किंटल प्रति हेक्टेयर; पूसा नवीन - 325 किंटल प्रति हेक्टेयर; पूसा संतुष्टी - 300 किंटल प्रति हेक्टेयर; करेला पूसा विशेष - 200 किंटल

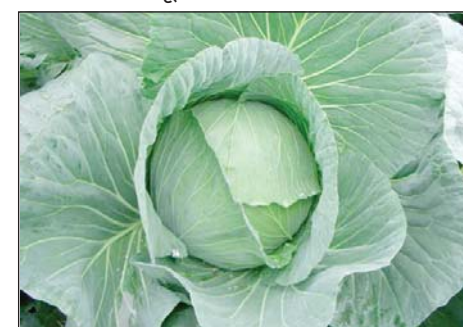


प्रति हेक्टेयर; पूसा दोमौसमी - 225 किंटल प्रति हेक्टेयर; पूसा औषधी - 200 किंटल प्रति हेक्टेयर खीरा पूसा उदय - 160 किंटल प्रति हेक्टेयर पूसा बरखा - 150 किंटल प्रति हेक्टेयर तोरई (चिकनी) पूसा स्नेहा - 150 किंटल प्रति हेक्टेयर; तोरई (धारीदार) पूसा नूतन - 150 किंटल प्रति हेक्टेयर पेठा पूसा उजवल, पूसा सब्जी पेठा - 350 किंटल प्रति

हेक्टेयर; खरबूजा पूसा मधुरस - 200 किंटल प्रति हेक्टेयर; तरबूजा शुगर बेबी - 300 किंटल प्रति हेक्टेयर चप्पन कट्टू पूसा पसन्द - 165 किंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या- पत्ता गोभी और पेठे की किस्में बताएं।

समाधान- पूसा संस्थान से अनुमोदित पत्ता गोभी और पेठे की संकर किस्म हैं- पत्ता गोभी पूसा कैबेज संकर-1 320 किंटल प्रति हेक्टेयर; पेठा पूसा उर्मी - 475 किंटल प्रति



हेक्टेयर; पूसा श्रेयाली - 520 किंटल प्रति हेक्टेयर।

स्रोत : भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

कृषक जगत

बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुसंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027
पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया	
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95	
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050	

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए. किताब कोड नं. पर निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____
ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____
जिला _____ फोन/मोबा. _____
कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____
संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी ऑर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीऑर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100, 2554864

खजूर अपने आप में एक टॉनिक भी है। खजूर के साथ उबला हुआ दूध पीने से ताकत मिलती है। खजूर को रात भर पानी में भिगो कर रखिये। फिर इसी में थोड़ा मसल कर उसका बीज निकाल दीजिए। यह हफ्ते में कम से कम दो बार सुबह लेने से अपने दिल को मजबूती मिलती है। यदि कब्ज की शिकायत है तो रात भर भिगाया हुआ खजूर सुबह महीन पीस कर लेने से यह शिकायत दूर हो सकती है।

पेड़ भी उपयोगी

खजूर के पेड़ का हर हिस्सा उपयोगी होता है। इसकी पत्तियाँ और तना घर के लिए लकड़ी बाड़ और कपड़े बनाने के काम आते हैं। पत्तियों से रस्सी, सूत और धागे बनाए जाते हैं जिनके प्रयोग से सुंदर टोकरियों और फर्नीचरों का निर्माण होता है। फल की डंडियों और पत्तियों के मूल हिस्से इंधन के काम आते हैं। खजूर से अनेक खाद्य पदार्थों का निर्माण होता है जिनमें सिरका, तरह-तरह की मीठी चटनियाँ और अचार प्रमुख हैं। अनेक प्रकार के बेकरी उत्पादों के लिए इसके गूदे का प्रयोग होता है। अरबी व्यंजन कानुआ और भुने हुए खजूर के बीज सारे अरबी समाज में लोकप्रिय हैं। यहाँ तक कि इसकी कोपलों को शाकाहारी सलाद में अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक समझा जाता है। इससे निकलने वाले खजुरी रस और उससे तैयार किए हुए मद्य तथा गुड़ का प्रचुर उपयोग होता है।

गुण

खजूर के फल बहुत पौष्टिक व शक्तिवर्धक होते

पौष्टिकता से भरपूर खजूर



हैं। फलों के गूदे में लगभग 20 प्रतिशत नमी, 60.65 प्रतिशत शर्करा, 2.5 प्रतिशत रेशा, 2.5 प्रतिशत प्रोटीन, 2 प्रतिशत से कम वसा व खनिज तत्व तथा विटामिन एए विटामिन बी.1 (थायमीन), विटामिन सी, नियासिन तथा विटामिन बी.2 (राईबोफ्लेबिन) पाए जाते हैं। एक किलोग्राम खजूर के फलों से 3100 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। खजूर के फलों को खाने से रक्तवर्धक तथा कब्ज दूर करने में सहायक होते हैं इसमें औषधीय गुण भी पाये जाते हैं। शीतकाल में खजूर सबसे अधिक लोकप्रिय मेवा माना जाता है। खजूर रेगिस्तानी सूखे प्रदेश का फल है। प्रकृति की यह अनुपम देन खास ऐसे प्रदेशों के लिए ही है, जहां

जिन्दगी बड़ी कठिन होती है और जहां बरसात या पीने के पानी की कमी होती है। इसके पेड़ हमें जीवन से लड़ना सिखाते हैं, इसीलिए इसके खाने का प्रचलन ज्यादातर सूखे रेगिस्तानी इलाकों में ही होता है। सूखे खजूर को छुहारा या खारकी कहते हैं। पिंड खजूर भी इसका दूसरा नाम है। श्वांस की बीमारी में इसका शहद अत्यंत लाभप्रद होता है।

खजूर विश्व के सबसे पौष्टिक फलों में से एक है। सदियों से यह मध्यपूर्व एशिया और उत्तरी अफ्रीका के रेगिस्तानी इलाकों का प्रमुख भोजन बना हुआ है क्योंकि वहाँ इसके सिवा और कुछ उत्पन्न नहीं होता। यह ताज़ा और सूखा, दोनों तरह के फलों में गिना जा सकता है। पेड़ पर पके खजूर ज्यादा स्वादिष्ट होते हैं। लेकिन जल्दी खराब हो जाने की वजह से इसे धूप में सुखाया जाता है। ताज़े खजूर के मुकाबले सूखे खजूर में रेशों की मात्रा अधिक होती है। खजूर में पौष्टिक तत्व काफी मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से ग्लूकोज और फ्रक्टोज के रूप में नैसर्गिक शर्करा हमारे शरीर को मिलती है। इस तरह की शर्करा शरीर में शोषण के लिए तैयार रहती है, इसलिए यह आम शर्करा से अच्छी होती है। रमजान के पवित्र महिने में खजूर खा कर ही उपवास की समाप्ति की जाती है।

इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा यह ठंडे या शीत गुणधर्म वाला फल माना जाता है।

कितना खाएं

विशेषज्ञों के अनुसार 100 ग्राम से अधिक खजूर नहीं खाने चाहिए। इससे पाचन शक्ति खराब

होने का भय रहता है। अगर कोई बहुत ही दुबला पतला हो, तो खजूर खाकर दूध पीने से उसका वजन भी बढ़ जाता है। यद्यपि खजूर हर प्रकार से गुणकारक है, परन्तु इसमें विरोधाभास भी पाया जाता है। शीतकाल में जो इसे खाते हैं, वे इसे गरम मानते हैं। आयुर्वेद ग्रंथों में इसे शीतल गुण वाला माना है, इसलिए गरम तासीर वालों को यह खूब उपयोगी व माफिक आता है। ठंडा आहार जिनके शरीर के अनुरूप नहीं होता, उन्हें खजूर नहीं खाना चाहिए। खजूर एक तरह से अमृत के समान है। यह आंखों की ज्योति व याददाश्त भी

बढ़ाता है। दांतों से लहू निकले या मसूड़े खराब हों, तो यह दवा का काम करता है। इसके खाने से बाल कम झड़ते हैं। खजूर व उसका शहद एक तरह से कुदरत की अनुपम देन हैं, इसलिए खूब खाएं व खूब खिलाएं।

स्वास्थ्य शिक्षण

मक्का का पौष्टिक दैनिक आहार

- डॉ. अल्पना शर्मा • डॉ. मुनेन्द्र सिंह • डॉ. बी. के. प्रजापति
- गुरुप्रीत गांधी • दीपक चौहान • भागवत प्रसाद पन्ने

पौष्टिक लहू:



सामग्री:- मक्का आटा - 100 ग्राम, चना बेसन- 50 ग्राम, मूंगफली - 50 ग्राम, तिल 50 ग्राम, घी या तेल - 85 ग्राम, शर्करा - 100 ग्राम।

विधि:- 1. मक्का आटा, बेसन को अलग-अलग सुनहरा भूरा रंग होने तक घी में भून लें।

2. मूंगफली को भूनकर छिलका निकाल लें।
3. तिल को भून लें।

4. फिर सारी सामग्री को मिलाकर इसमें पिसी शर्करा मिलाकर लहू बांध लें।

मक्का की खीर:-



सामग्री:- मक्का दलिया- 20 ग्राम, दूध - 250 मिली, शर्करा-20 ग्राम, इलायची।

विधि:- दूध उबाल लें। इसमें मक्के की दलिया डाल कर धीमी आंच पर पकायें इसमें इलायची पाउडर व शर्करा मिला दें।

मक्के की खिचड़ी:-



सामग्री:- मक्के की दलिया - 50 ग्राम, घी-10 ग्राम, नमक-1 ग्राम, हल्दी पाउडर - 1 ग्राम, जीरा-1 चम्मच, पानी-450 मिली, मूंग दाल - 50 ग्राम, हरी मिर्ची-1 ग्राम, धनियां स्वादानुसार।

विधि:- कुकर में तेल गर्म करके इसमें जीरा, मिर्च का बघार दें। इसमें दाल, मक्के की दलिया भून लें और हल्दी, नमक, पानी, डालकर पका लें।

मक्के का मीठा दलिया:-

सामग्री:- मक्का का दलिया-50 ग्राम, पानी-200 मिली, दूध-150 मिली, शर्करा-15 ग्राम।

विधि:- मक्का के दलिया को भूनकर फिर पानी में अच्छी तरह पकायें। इसमें दूध और शर्करा मिलाकर 5 मिनट और पकायें।

पकोड़ा:-

सामग्री:- मक्का आटा -100 ग्राम, प्याज-150 ग्राम, लहसुन-5 ग्राम, अदरक-5 ग्राम, मिर्च हरी-5 ग्राम, तेल एवं नमक - जरूरत अनुसार।

विधि:- मक्के के आटे में कटी प्याज, अदरक, मिर्च, लहसुन, और मसाले मिलाकर पानी से घोल बना लें। तेल गर्म होने पर तैयार मिश्रण से पकौड़े बनाकर छान लें।

मीठे पुए:-

सामग्री:- मक्के का आटा - 150 ग्राम, शर्करा-50 ग्राम, गेहूँ आटा-50 ग्राम, तेल-तलने के लिये।

विधि:- मक्के का आटा एवं गेहूँ के आटे को मिला लें इसमें शर्करा डालकर पानी से घोल बना लें। तैयार घोल की एक-एक चम्मच गर्म तेल में डालकर पुए जैसे तल लें।

मक्के की पूरी:-

सामग्री:- मक्का आटा -100 ग्राम, गेहूँ आटा -100 ग्राम, चना आटा - 100 ग्राम, अजवायन -100 ग्राम, नमक-1 चम्मच, तेल -तलने के लिये।

विधि:- 1. आटे को छनी से छान लें और उसमें नमक अजवायन मिलाकर पूरी का कड़ा आटा गूंद लें।

2. छोटे गोले बनाकर पूरी बेलकर सुनहरे होने तक तल लें।



योग से रहें निरोग

जोड़ों का दर्द - सर्दी में ज्यादा उम्र के लोगों में जोड़ों का दर्द या जकड़न आदि की समस्याएं काफी आम होती हैं। इसे दूर करने के लिये सूक्ष्म व्यायाम है जिसमें शरीर के हर जोड़ जिसमें कंधे, कमर, घुटने की गतिविधियां शामिल हैं। इस व्यायाम में सभी ज्वाइंट्स का रोटेशन और लूजिंग करना होता है।

अस्थमा या एलर्जी- अस्थमा या एलर्जी से ग्रस्त लोगों के लिये वाकिंग और ब्रीदिंग पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है। ब्रीदिंग एक्सरसाइज में डॉग ब्रीदिंग, टाइगर ब्रीदिंग आदि शामिल हैं। यह सभी क्रियाएं श्वांस रोगों के साथ ही डायबिटीज, डिप्रेशन आदि के लिये भी फायदेमंद हैं।

यह है पर्याप्त- स्वस्थ रहने के लिये कम से कम पवन मुक्तासन क्रिया, लेग राइजिंग और सूर्य नमस्कार करना चाहिए। इसके अलावा भुजंगासन, वक्रासन, अर्धमशेन्द्रासन, अर्धचक्रासन, पद्महस्तासन करना चाहिए। साथ ही प्राणायाम नाडी शोधन करना चाहिए। वे लोग जिन्हें चक्र आते हैं उन्हें अर्धचक्रासन नहीं करना चाहिए।

पाश्विक पंचांग

29 सितम्बर से 12 अक्टूबर 2025

विक्रम संवत् 2082

आश्विन शुक्ल 7 से कार्तिक कृष्ण 6 तक

दि. माह	वार	तिथि/त्योहार
29 सितम्बर	सोम	आश्विन शुक्ल 7 सरस्वती आवाहन
30 सितम्बर	मंगल	महाष्टमी व्रत
1 अक्टूबर	बुध	दुर्गा नवमी व्रत
2 अक्टूबर	गुरु	विजयादशमी
3 अक्टूबर	शुक्र	पापांकुशा एकादशी पंचक 6.37 शाम से
4 अक्टूबर	शनि	प्रदोष व्रत, पंचक
5 अक्टूबर	रवि	पंचक
6 अक्टूबर	सोम	शरद पूर्णिमा, पंचक
7 अक्टूबर	मंगल	स्ना.दा. पूर्णिमा पंचक 3.18 रात तक
8 अक्टूबर	बुध	कार्तिक कृष्ण 1/2
9 अक्टूबर	गुरु	3
10 अक्टूबर	शुक्र	4 करवा चौथ व्रत
11 अक्टूबर	शनि	5
12 अक्टूबर	रवि	6 स्कंध षष्ठी व्रत

एमपीयूएटी: रबी-2025 की बैठक आयोजित



उदयपुर। क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति संभाग चतुर्थ-अ की बैठक अनुसंधान निदेशालय के सभागार में निदेशक अनुसंधान, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर की अध्यक्षता में कृषि अनुसंधान केन्द्र, अनुसंधान निदेशालय, उदयपुर में आयोजित की गई।

निदेशक अनुसंधान, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि विगत वर्ष में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा कुल 49 तकनीकी अनुसंधानों की गई एवं मक्का, औषधीय फसलें, मूंगफली, ज्वार की नवीन किस्में अधिसूचित की गयी जो कि विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य की परिचायक है। डॉ. वर्मा ने कहा कि वर्तमान में मौसम परिवर्तन के अनुरूप किस्मों का विकास आवश्यक है एवं प्राकृतिक खेती पर जोर दिया ताकि जनमानस को रसायन मुक्त खाद्य एवं स्वस्थ पोषण प्राप्त हो सकें। डॉ. आर. एल. सोनी, निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में राजस्थान विभिन्न फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। साथ ही प्राकृतिक खेती एवं अन्य आधुनिक तकनीकियों को अपनाते हुए उत्पादन को बढ़ाकर किसानों को लाभान्वित करने पर जोर दिया।

डॉ. मनोज महला, राजस्थान कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं निदेशक, छात्र कल्याण अधिकारी ने राज्य में उत्कृष्ट गुणवत्ता की पादप सामग्री उपलब्ध कराने के लिए गुणवत्ता नर्सरियों की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रारम्भ में श्री विनोद कुमार जैन, संयुक्त निदेशक कृषि

विभाग, भीलवाड़ा ने गत रबी में वर्षा का वितरण, बोई गई विभिन्न फसलों के क्षेत्र एवं उनकी उत्पादकता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. अमित त्रिवेदी ने विश्वविद्यालय में चल रही विभिन्न परियोजनाओं की जानकारी दी। डॉ. त्रिवेदी ने संभाग की विभिन्न फसलों में आ रही समस्याओं के निराकरण हेतु प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

बैठक में श्री महेश चेजारा, संयुक्त निदेशक उद्यान, भीलवाड़ा, डॉ. ओ. पी. शर्मा, उपनिदेशक, चित्तौड़गढ़, श्री रमेश आमेटा, कृषि अनुसंधान अधिकारी, चित्तौड़गढ़, श्री पी. सी. वर्मा, परियोजना निदेशक, आत्मा, चित्तौड़गढ़ एवं डॉ. रविकांत शर्मा, उपनिदेशक, अनुसंधान निदेशालय, उदयपुर उपस्थित थे।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, शेथर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जन्मरेटर आदि
 - बीज ■ औषधीय फसल
- विज्ञापन दर** - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
 - अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण

साइज : फ़िक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेल्स, तीर्थ यात्राएँ, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएँ, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएँ, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat @krishakjagatindia @krishak_jagat

महिंद्रा का सबसे एडवांस्ड ट्रैक्टर YUVO TECH+ 475 DI लॉन्च

मिलेगा दमदार
mBULL इंजन और
6 साल की वारंटी



नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत के अग्रणी ट्रैक्टर निर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा ने किसानों के लिए अपनी YUVO सीरीज का विस्तार करते हुए नया ट्रैक्टर YUVO TECH+ 475 DI लॉन्च कर दिया है। यह ट्रैक्टर 42 हॉर्सपावर की श्रेणी में आता है और इसे खासतौर पर किसानों की आधुनिक जरूरतों और बदलती कृषि तकनीकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। ट्रैक्टर में महिंद्रा का नया, दमदार और ईंधन-कुशल mBULL इंजन दिया गया है, जो कठिन परिस्थितियों और भारी उपकरणों के साथ भी उत्कृष्ट प्रदर्शन देता है। इस ट्रैक्टर की एक और बड़ी खासियत है कि कंपनी इस पर 6 साल की इंडस्ट्री-बेस्ट वारंटी दे रही है, जो भारतीय कृषि यंत्र बाजार में भरोसे का नया मानक स्थापित करती है। इस ट्रैक्टर का लॉन्च मुख्य रूप से उन किसानों को ध्यान में रखकर किया गया है, जो उच्च उत्पादकता, कम ईंधन खपत, और बेहतर आराम की तलाश में हैं।

दमदार प्रदर्शन वाला mBULL इंजन- Mahindra YUVO TECH+ 475 DI में दिया गया है नया 2980 सीसी का mBULL 3-सिलेंडर इंजन, जो अधिकतम 191 Nm टॉर्क और 28% बैकअप टॉर्क देता है। यह इंजन हाई-क्यूबिक कैपेसिटी वाला है, जो खेतों में गहरे और भारी उपकरणों जैसे रोटोवेटर, कल्टीवेटर, बेलर, ट्रॉली आदि के साथ काम करने में बेहतर तालमेल और ताकत प्रदान करता है। इस इंजन की खास बात यह है कि इसमें वॉटर सेपरेटर तकनीक दी गई है, जो डीज़ल में मौजूद पानी और अशुद्धियों को अलग करता है। इससे इंजन की परफॉर्मेंस बेहतर होती है और इसकी उम्र लंबी होती है।

मल्टी-स्पीड PTO और ईंधन बचत- महिंद्रा YUVO TECH+ 475 DI में मल्टी-स्पीड PTO (MSPTO) दी गई है, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार PTO की स्पीड सेट कर सकते हैं। इससे विभिन्न कृषि उपकरणों को चलाने में लचीलापन मिलता है और ईंधन की भी बचत होती है। ट्रैक्टर में डुअल क्लच, 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो कठिन ज़मीन और

भारी कार्यों में ट्रैक्टर को नियंत्रित और प्रभावी तरीके से चलाने में मदद करते हैं।

ऑपरेटर के आराम और कंट्रोल का ध्यान- महिंद्रा ने YUVO TECH+ 475 DI को सिर्फ ताकतवर ही नहीं, बल्कि आरामदायक और उपयोगकर्ता-मित्रवत भी बनाया है। इसका विस्तृत ऑपरेटर प्लेटफॉर्म, पावर स्टीयरिंग, और एर्गोनॉमिक कंट्रोल लंबे समय तक काम करने वाले किसानों के लिए बेहद सुविधाजनक हैं।

6 साल की भरोसेमंद वारंटी- Mahindra YUVO TECH+ 475 DI ट्रैक्टर पर कंपनी दे रही है 6 साल या 6000 घंटे की वारंटी (जो भी पहले हो)। यह इंडस्ट्री में सबसे लंबी वारंटी मानी जा रही है, जिससे किसानों को लंबे समय तक मेंटेनेंस और सर्विस का भरोसा मिलता है।

फिलहाल इन राज्यों में उपलब्ध- नई तकनीक और दमदार इंजन से लैस यह ट्रैक्टर आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र के चुनिंदा महिंद्रा डीलरशिप्स पर उपलब्ध है। जल्द ही इसे देश के अन्य हिस्सों में भी लॉन्च किए जाने की योजना है।

कृषक जगत राष्ट्रीय कृषि अखबार
78 वर्ष
वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक

- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की
सदस्यता राशि

⇒ वार्षिक रु. 600/- ⇒ दो वर्ष रु. 1000/-
⇒ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह □ भोपाल □ जयपुर □ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें। (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें)।

नाम

ग्राम पो.

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें :

वि.ख. तह.

जिला पिन राज्य

शिक्षा भूमि उम्र

ट्रैक्टर/मॉडल फोन/मो.

ई-मेल

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/

मनीऑर्डर/क्र. 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,

Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक

http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861

2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

प्रसार प्रबंधक **कृषक जगत**

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100,

मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org

जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952

रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो. : 9826255862

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर,

मो. : 9826021837, 9826024864

नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952



देश में मान्य 146 अधिसूचित बायोस्टिमुलेंट्स की सूची

देश एवं प्रदेश में नकली उर्वरक, बीज, कीटनाशक और बायोस्टिमुलेंट्स की समस्याओं एवं शिकायतों को मद्देनजर रखते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि केवल 146 अधिसूचित बायोस्टिमुलेंट्स ही भारत में मान्य हैं। सूची इस प्रकार है-

Biostimulant		
1. Humic Acid 5 % (Powder)	49. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 99.52 % (Liquid)	92. Humic substance 16% (Liquid)
2. Potassium Humate 49% (Powder)	50. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 97.52% (Liquid)	93. Humic substances 6% (Liquid)
3. Humates and Fulvates 22% (Liquid)	51. Mixture of Protein Hydrolysate and Antioxidant (Liquid)	94. Humic acid 0.27% (Liquid)
4. Humates (12.5%) (Liquid)	52. Mixture of Protein hydrolysate, seaweed extract and humic acid (Liquid)	95. Humic acid 1 % (Liquid)
5. Humic Acid 51 % (Granular)	53. Protein hydrolysate 62.5 % (Animal source) (Liquid)	96. Humic substances 1.5% (Granule)
6. Ascophyllum nodosum 15% (Liquid)	54. Protein hydrolysate (Bacterial biomass) 100 % (Powder)	97. Humic substances 6% (Liquid)
7. Sargassum tenerrimum 2% (Granular)	55. L-Pyroglyutamic acid (Pidolic acid) 10 % (Liquid)	98. Humic acids 40% (Powder)
8. Kappaphycus alvarezii 24% (Liquid)	56. Antioxidant (Glycyrrhizic acid) 1 % (Powder)	99. Humic acid- 1.2 % (granules)
9. Sargassum tenerrimum 10% (Liquid)	57. Humic acid 50% (Powder)	100. Humic acid 4% (Liquid)
10. Adhatoda vassica (Powder)	58. Humic acid and Fulvic acid 45.1% (Crystal)	101. Sargassum tenerrimum 1.2% (Granules)
11. Mixture of Humic Acid, Amino Acid, Vitamins and Bio-chemicals (powder)	59. Humic acid- 7.1% (Granule)	102. Sargassum tenerrimum 10% (Liquid)
12. Humic Acid 6% (Liquid)	60. Humic acid 19.6 % (Liquid)	103. Ascophyllum nodosum 90% (Flakes)
13. Humic acid 1.5% (Granules)	61. Seaweed (Sargassum wightii) extract 35 % (Powder)	104. Ascophyllum nodosum 5% (Powder)
14. Humic and Fulvic acid 25.05% (Liquid)	62. Seaweed (Sargassum wightii) extract 5 % (Granule)	105. Kappaphycus alvarezii 4.4% (liquid)
15. Humic and Fulvic acid 76% (Powder)	63. Seaweed (Sargassum wightii) extract 10 % (Liquid)	106. Kappaphycus alvarezii 19.5% (liquid)
16. Ascophyllum nodosum 7% (Liquid)	64. Seaweed (Sargassum wightii) extract 4 % (Granules)	107. Ascophyllum nodosum 20% (liquid)
17. Kappaphycus alvarezii 7.2% (Liquid)	65. Seaweed (Kappaphycus alvarezii) extract- 17% (Liquid)	108. Ascophyllum nodosum 22% (liquid)
18. Kappaphycus alvarezii 9.5% (Liquid)	66. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 18.4% (Liquid)	109. Durvillaea potatorum 7.5% (liquid)
19. Kappaphycus alvarezii and Sargassum swartzii in ratio of 1:1 (Liquid)	67. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 22% (Liquid)	110. Carrabitol (Kappaphycus alvarezii) 80% (Powder)
20. Spirulina 10% (Liquid)	68. Mixture of humic substances and seaweed extract (Liquid)	111. Ascophyllum nodosum 98% (liquid)
21. Adhatoda vasica extract 2% (Liquid)	69. Mixture of seaweed extract and vitamin (Liquid)	112. Sargassum tenerrimum 10% (II) (liquid)
22. Mixture of seaweed extract and algal extract (Liquid)	70. Mixture of Protein hydrolysate and Humic acid (Granule)	113. Adhatoda vasica extract 2% (Liquid)
23. Mixture of Seaweed extract; Humic and Fulvic acid, Amino acids and Vitamins (Liquid)	71. Mixture of Seaweed extract, Potassium Humate and Protein Hydrolysates (Liquid)	114. Brassica juncea seed extract- 0.2% (Liquid)
24. Mixture of Antioxidant and Vitamins (Powder)	72. Mixture of Seaweed extract and Humic acid (Granule)	115. Cytokinin (Zea mays kernel) 0.2% (Liquid)
25. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Liquid)	73. Mixture of Seaweed extract, Humic acid and Fulvic acid (Granules)	116. Basil oil (Eugenol) 2% (Liquid)
26. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)	74. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)	117. Mixture of Seaweed and blue green algal extract (Liquid)
27. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Granules)	75. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)	118. Mixture of Protein Hydrolysate and Seaweed extract (Liquid)
28. Mixture of Botanical extract and Seaweed extract (Liquid)	76. Mixture of Protein hydrolysate and Humic acid (liquid)	119. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Granule)
29. Protein hydrolysate 62.1% (Animal Source) (Liquid)	77. Mixture of Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract, Protein hydrolysate and botanical extract (Liquid)	120. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Liquid)
30. Protein Hydrolysates 36.04% (Animal Source) (Liquid)	78. Protein hydrolysate 15% (Animal source) (Liquid)	121. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Powder)
31. Protein Hydrolysates 25% (Plant Source) (Liquid)	79. Protein Hydrolysate (Plant Source) 25 % (Powder)	122. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Granule)
32. Vinasse residue (Glutamic acid 18%)(Liquid)	80. Protein hydrolysate 20% (Plant source) (Liquid)	123. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (powder)
33. Protein hydrolysate 16.9% (Plant Source) (Liquid)	81. Protein hydrolysate 2% (Plant source) (Granule)	124. Mixture of Humic acid and Protein hydrolysate (Liquid)
34. Bacterial biomass hydrolysate (Amino acids 2%) (Liquid)	82. Protein Hydrolysate 27.5 % (Animal source) (Liquid)	125. Glutamic acid 5% (Powder)
35. Protein hydrolysate 1.5 % (Plant Source) (Granules)	83. Protein hydrolysate (Plant Source) (Liquid)	126. Protein hydrolysate 46.9% (Animal source) (Liquid)
36. Protein hydrolysate 62.5 % (Animal Source) (Liquid)	84. Protein hydrolysate 20% (Liquid)	127. Protein Hydrolysate 29.34% (Animal source) (Liquid)
37. Protein hydrolysate (Amino acids 10 %) (Plant. Source) (Liquid)	85. Cell free extract of Pseudomonas putida (Liquid)	128. Protein Hydrolysate 12% (Animal source) (Liquid)
38. Protein hydrolysate (Amino acids 5 %) (Plant Source) (Powder)	86. Phenolic compound (3 %) (Liquid)*	129. Protein Hydrolysate 68.33% (Animal source) (Liquid)
39. Protein hydrolysate (Amino acids 20 %) (Plant Source) (Liquid)	87. S- Absciscic acid (8.3%) (Granule)	130. Protein hydrolysate 16% (Animal source) (Liquid)
40. Protein hydrolysate 27% (Plant Source) (Powder)	88. Humalite 100% (Granular powder)	131. Glycine 5% (Powder)
41. Lipo-chitooligosaccharides from Escherichia coli (Liquid)	89. Humic acid and Fulvic acid 19.5 % (Liquid)	132. Protein hydrolysate 18% (Animal source) (Liquid)
42. Lipase from Saccharomyces cerevisiae (Powder)	90. Humalite 82% (Powder)	133. Protein hydrolysate 54% (Animal source) (Liquid)
43. Microbial cell (Methylococcus capsulatus): 1 x 10 ⁹ cfu/g (Powder)	91. Humic acid and Fulvic acid 85% (Powder)	134. Protein hydrolysate 20% (Plant source) (liquid)
44. Microbial Consortium 1 x 10 ⁷ cfu/ g		135. Proline 1% (Liquid)
45. 2- Bromo- (I H)- Indole- 3 Carboxaldehyde 1ppm (Liquid)		136. Amino acids (microbial source) 14% (Liquid)
46. Humic and Fulvic acid (29%) (Liquid)		137. Amino acids (microbial source) 40% (Powder)
47. Humate 7.15 % (Liquid)		138. γ-Polyglutamic acid from Bacillus subtilis (Liquid)
48. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 22%		139. Protease and Cellulase enzyme from Bacillus sp. (Liquid)
		140. Harpin αβ from Escherichia coli (Granule)
		141. Non Saccharomyces yeast (Wickerhamomyces anomalus) 20 % (Powder)
		142. Homobrassinolide- 0.04% (Liquid)
		143. Homobrassinolide- 0.03% (liquid)
		144. Vitamin B3 (Nicotinamide) 3.25% (liquid)
		145. Vitamin (Alpha Tocopherol) 1% (Liquid)
		146. Phenolic compounds 3% (Liquid)*

स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार

पाली डेयरी में बनेगा तीन लाख लीटर क्षमता का कूलिंग सिस्टम : श्री कुमावत

30वीं वार्षिक आमसभा में लक्ष्यों के खर्चों पर हुआ मंथन

जयपुर। पाली डेयरी की 30वीं आमसभा का आयोजन पाली जिले के संघ मुख्यालय पर किया गया। जिसमें पाली, फालना एवं जैतारण क्षेत्र के अध्यक्ष और संचालक मण्डल के सदस्य उपस्थित रहे। पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने अपने सम्बोधन में राज्य सरकार व डेयरी विभाग द्वारा प्रचलित व प्रस्तावित योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पशुपालन अत्यंत उन्नत रोजगार के रूप में स्थापित हो चुका है। अपना संस्मरण सुनाते हुए बताया कि गुजरात प्रवास के दौरान एक महिला ने बताया कि उसने प्रतिवर्ष 2 करोड़ रुपये की आमदनी केवल दूध व्यवसाय करके अर्जित की है। इसी प्रकार मातृशक्ति जो पाली डेयरी से जुड़ी है वे भी ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने मातृशक्ति से आह्वान किया कि पाली डेयरी से जुड़कर अपने सामाजिक व आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करें।

इस मौके पर डेयरी मंत्री ने पाली डेयरी के लगातार तीसरे वर्ष भी शुद्ध लाभ में बढ़ोतरी होने पर अध्यक्ष व डेयरी प्रबंधन को बधाई दी। उन्होंने कहा कि वित्तीय वर्ष-2022-23 में जहां पाली डेयरी ने 31.45 लाख का शुद्ध लाभ अर्जित किया, वहीं, वर्ष-2023-24 में शुद्ध लाभ एक करोड़ 62 लाख 53 हजार रुपए पहुंच गया। डेयरी ने 2024-25 में दो करोड़ 61 लाख 60 हजार रुपए का शुद्ध लाभ अर्जित कर मानक स्थापित किए हैं। श्री कुमावत ने कहा कि मैं पाली डेयरी के उज्ज्वल

भविष्य की कामना करता हूं और संचालक मंडल व डेयरी प्रशासन को अग्रिम शुभकामनाएं प्रेषित



करता हूं कि वह अपने आगामी वर्ष 2025-26 के शुद्ध लाभ के आठ करोड़ 58 लाख 14922 रुपए के लक्ष्य को भी पूरा करें। डेयरी मंत्री ने यह भी कहा कि चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 में पाली डेयरी की दुग्ध भंडारण क्षमता तीन लाख लीटर तक बढ़ाने की योजना है। इसके तहत यहां तीन लाख लीटर क्षमता का कूलिंग सिस्टम विकसित किया जाएगा।

डेयरी अध्यक्ष ने गिनाई उपलब्धियां- इससे पहले पाली डेयरी के अध्यक्ष श्री प्रतापसिंह बीठिया ने आमसभा में वर्ष 2024-2025 में प्राप्त उपलब्धियों के अंतर्गत बताया कि समस्त क्षेत्रों में सरस व पाली दुग्ध संघ की बढ़ती साख व सदस्यों

के विश्वास के अनुरूप दुग्ध संकलन की मात्रा निरन्तर बढ़ रही है जो प्रतिदिन लगभग 1 लाख लीटर औसत रही है। पाली डेयरी में सहकारी सदस्यों की संख्या 41 हजार से अधिक हो गयी है जिसमें 13023 महिला सदस्यों के माध्यम से 203 महिला समितियां कार्यशील हैं।

श्री बिठिया ने वर्ष 2024-25 में पाली डेयरी में विभिन्न क्षेत्रों जैसे दूध संकलन समिति सुदृढीकरण, दूध व दुग्ध उत्पाद विक्रय, नवीन तकनीकी व पशु नस्ल सुधार कार्यक्रम में गायों हेतु बछिया के लिये

पाली डेयरी की लगभग 16.41 करोड़ की योजना जीका की केन्द्र सरकार के द्वारा स्वीकृत हुई है। जिसके अंतर्गत आधारभूत संरचना विकास में समिति, बी.एम.सी., ए.एम.सी.यू., प्रयोगशाला सुदृढीकरण, प्रशिक्षण व प्रशिक्षित समूहों के विकास से संघ के विकास हेतु गतिविधियों को संचालित करना है।

श्रेष्ठ दुग्ध समितियां सम्मानित- कार्यक्रम में डेयरी मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने पाली, फालना एवं जैतारण क्षेत्र की श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों को पुरस्कृत करने के साथ-साथ सम्पूर्ण जिले में प्रथम पिपलिया कलां, द्वितीय देवली कलां, तृतीय मालपुरिया कलां व बी.एम.सी. स्तर पर श्रेष्ठ कार्य सम्पादन हेतु क्रमशः बोमादड़ा, गौशाला बर व खिवान्दी को पुरस्कृत किया। इसी प्रकार विपणन में श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु विभिन्न पुरस्कार प्रदान किये।

500 मीट्रिक टन के गोदाम का शिलान्यास- एजीएम के बाद मंत्री श्री कुमावत ने डेयरी परिसर में मेन गेट के समीप प्रस्तावित 1 करोड़ 5 लाख रुपये की लागत के गोदाम के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। उन्होंने बताया कि इसका निर्माण कार्य करीब पांच माह में पूरा होगा। गोदाम की भंडारण क्षमता 500 मीट्रिक टन होगी। इससे तैयार दूध उत्पादों के भण्डारण व वितरण की अच्छी सुविधा हो जायेगी।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों* के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(* दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेक्टर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज



जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास 2
साईज - 16, 20 मिमी



जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
13, 15 मील (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी



नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटिंग में उपलब्ध

जैन ड्रिप
प्रति बूँद, फसल भरपूर!

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.
छोटे छोटे कर्म. आसमान छूने का दम!

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाइट: www.jains.com



सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष ने ग्रामीण सेवा शिविर का किया निरीक्षण

महिला कृषकों को मिनी बीज किट किए वितरित



जयपुर। राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष श्री सी. आर. चौधरी ने जालोर तहसील की रेवत ग्राम पंचायत में लगे ग्रामीण सेवा शिविर का निरीक्षण कर व्यवस्थाएँ देखीं।

अध्यक्ष ने विभागवार हेल्प डेस्क पर पहुँच अधिकारियों से किए जा रहे कार्यों के संबंध में जानकारी ली तथा ग्रामीणों से बातचीत कर उनकी समस्याओं के निस्तारण के सम्बंध में फीडबैक लिया। उन्होंने कर्मिकों को निर्देश दिए कि केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ आमजन को पारदर्शी, सरल और समयबद्ध तरीके से उपलब्ध कराया जाए। सेवा शिविरों का उद्देश्य लोगों को घर

के पास ही विभिन्न योजनाओं का लाभ देना है, इसलिए सभी कर्मिक अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करें।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण सेवा शिविरों के माध्यम से आमजन की समस्याओं के समाधान का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने उपस्थित आमजन से केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने की बात कही। उन्होंने महिला कृषकों को मिनी बीज किट प्रदान किए। इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार, पंचायत समिति विकास अधिकारी, विभागीय कर्मिक व बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।